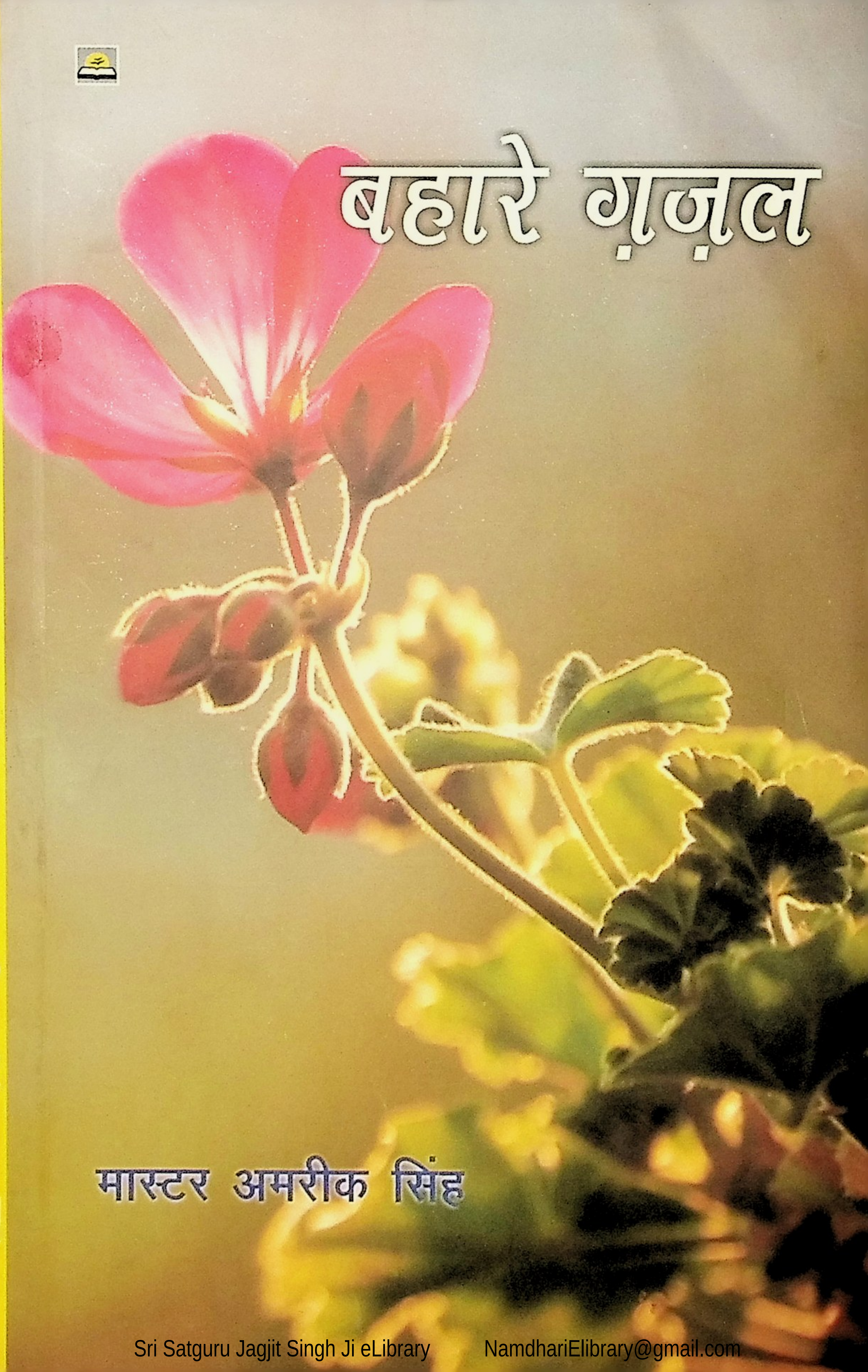


बहारे ग़ज़ल

मास्टर अमरीक सिंह

बहारे ग़ज़ल

मास्टर अमरीक सिंह

उड़ान पब्लिकेशंस, मानसा

2010

ISBN-978-93-80672-11-3

Udaan Publications,
Mansa-151505, India.
01652-233087, 098148-09219
udaan123@rediffmail.com
Printed & Bound at Lucky Enterprises, Delhi
कम्पोजिंग सैटिंग : सुभाष कम्बोज, रानियां (090507-78294)

Bahare Ghazal (Ghazals)

By Master Amrik Singh
New Lallepur Byepass, Sabji Mandi, Elnabad - 125102
Disst.: Sirsa (HARYANA)
Phone: 093541-24515

समर्पितः

सरदार साधु सिंह किसान
जो मेरे दोस्त भी हैं,
दर्पण भी।

आपके रूबरू

जैसा कि आप सब जानते हैं आज़ादी से पहले संयुक्त पंजाब में स्कूलों व कालेज़ों में उर्दू ही शुरू से पढ़ाई जाती थी। यहां तक कि सरकारी जबान भी उर्दू और अंग्रेजी ही थी। इसलिए मैनें भी स्कूल में सबसे पहले उर्दू में ही पढ़ना शुरू किया था। पहले दिन जब मेरे पिता स्वर्गीय श्री स. करतार सिंह जी (परमात्मा उनको स्वर्ग नसीब करे) मुझे स्कूल में (जिसको उस वक्त मदरसा ही कहा करते थे) मेरे उस्ताद (जिनको सब लोग उस समय मुंशी जी ही कहा करते थे) श्रीमान स्वर्गीय पं० रामदास साहब के पास छोड़ आए थे उन्होने ज़मीन पर रेत बिछा कर मेरे दाऐं हाथ की पहली उँगली से अलफ लिखवाया व मुझे ताकीद की कि आज तुम्हारा पहला पाठ यही है। सारा दिन इसको रेत पर लिखते रहो, मिटाते रहो। मैं बार–बार ऐसा करता रहा। शाम को जब मैं घर आया तो मेरी माता सम्माननीय स्वर्गीय लाभ कौर जी को बताया कि मैनें आज अलिफ़ लिखना सीख लिया है। वह चूंकि एक धार्मिक महिला थी इसलिए उन्होने खुशी से मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "बेटे अलिफ़ सीख लिया तो सब कुछ सीख लिया। अलफ से ही अल्ला बनता है और भगवान वाहेगुरू अल्ला के ही नाम हैं। गुरूवाणी में भी दर्ज है :–

अव्वल अल्ला पूर उपाया कुदरत के सब बंदे
एक नूर ते सब जग उपजया कौन भले कौन मंदे

खैर मैनें खुदा के करम से उर्दू से ही मैट्रिक पास कर ली। इस दौरान मैं काफी उूर्द अदब पढ़ चुका था। हमारी कोर्स क़ी उर्दू की किताब 'मुरक्का–ए–अदब' में उर्दू के मशहूर शायरों की ग़ज़लें और मशहूर अदीबों के अफ़साने दर्ज़ थे। जिसमें से ग़ालिब, ज़ौक, मोमिन, अमीर, सौदा वगैरह की बहुत सी ग़ज़लें मुझे ज़ुबानी याद थी। कारण हमारे

उर्दू के उस्ताद काज़ी मुनीरूद्दीन साहब ख़ुद शायर थे। वो हमें हफ़्ता के बीच पांच दिन उपरोक्त शायरों के कलॉम गाकर पढ़ाते थे। पहले ख़ुद पढ़ते हम अनुसरन करते। सप्ताहांत फिर ग़ज़ल की तशरीह कुछ इस ढंग से करते कि अर्थ हमें समझ आ जाता। इसलिए ही मेरी पंजाबी की ग़ज़लो में भी उन ग़ज़लों की बहर का रंग साफ नज़र आता है।

विद्यार्थी जीवन में मैं उर्दू के कई रसाले पढ़ा करता था जिससे उूर्द ज़बान के साथ मेरा लगाव काफी बढ़ गया।

आज़ादी के बाद माहौल बिल्कुल बदल गया। बदकिस्मती से उर्दू ज़बान पंजाब में प्रायः समाप्त हो गई। हिंदी और पंजाबी ने उसकी जगह ले ली। मेरी मातृभाषा चूंकि पंजाबी है अतः मैने पंजाबी में ग़ज़लें लिखनी शुरू कर दी। फिर भी उर्दू से मैं ज्यादा दूर नहीं हुआ। देहली से प्रकाशित होने वाली उर्दू पत्रिका 'बीसवीं सदी' पहले लाहौर से प्रकाशित होती थी और स्वर्गीय ''खुशतर ग्रामी'' साहब इसके सम्पादक होते थे। इस पत्रिका में 'फिक्र तौंसवी' के 'तीरो–नश्तर', राम लाल के अफसाने, शौकत थानवी की रचनाएं, कंवर महेंद्र सिंह बेदी की ग़ज़ले व नज़्में मिलाप अखबार जलन्धर से फिक्र तौंसवीं के 'प्याज़ के छिलके' का भी उनके आख़री दम तक में पाठक रहा जिसने मेरा उर्दू से नाता जोड़े रखा। इस दौरान यहां मेरी पंजाबी में ग़ज़लों की कई किताबें छपीं वही गाहे बगाहे उर्दू ग़ज़ल पर भी मेरी कलम चलती रही। इसी का नतीजा है कि इस किताब 'बहारे ग़ज़ल' में उर्दू की ग़ज़लें आपके सम्मुख रखने की जसारत कर रहा हूं।

हो सकता है कि उस्ताद शायरों के मुकाबिले में यह ग़ज़लें न उतर सकें मगर मैने मेरी अज़ीज़ जबान उर्दू को सम्मान देने की कोशिश की है। इस ज़बान ने ही मुझे दूसरी ज़बानों में लिखने का रास्ता दिखाया है।

अंत में मैं उन सभी उस्ताद शायर सहिबान का ॠणि एंव आभारी हूं जिन की शायरी के प्रभाव से यह 'बहारे ग़ज़ल' आप सब की नज़र कर सका। आमीन!

– मास्टर अमरीक सिंह

80 वर्षीय युवा ग़ज़ल–गो हैं मास्टर अमरीक सिंह : कथूरिया

किसी ग़ज़लकार, लेखक या कवि के विषय में टिप्पणी करना, उसकी पुस्तक के प्रति अपने आलोचनात्मक विचार प्रस्तुत करना, निसंदेह उतना ही मुश्किल है जितना गूंगे का गुड़ खा कर उस की मिठास के बारे में कुछ भी कह सकना मुश्किल कार्य है किसी ग़ज़लों के गुलदस्ते का आनंद लेकर उसकी खुशबू पर अपनी राय पेश करना और यदि वो पुस्तक 'बहारे–गज़ल' हो और ग़ज़लकार मास्टर अमरीक सिंह जैसा विद्वान व्यक्ति हो तो फिर यह कार्य और भी मुश्किल हो जाता है।

इस पुस्तक से पूर्व मास्टर अमरीक सिंह जी द्वारा लिखी पुस्तकों की लम्बी फेहरिस्त है तथा 'ग़ज़ल' मास्टर जी का पंसदीदा विषय रहा है। 'ग़ज़ल' प्रमाण इस बात से मिलता है कि आप मास्टर जी से जब कभी रू–ब–रू होंगें व बातचीत का सिलसिला चल पड़ेगा तो आप पांएगें कि सामान्य बातचीत में भी मास्टर जी कोई न कोई शियर या मिसरा बीच–बीच में इस तरह पिरोते रहेंगे कि लगता है कि फलां शेयर या मिसरा शायिद बना ही इसी मौके के लिए था। कहने का भाव यह है कि मास्टर जी की हर बात, हर कसीदा अपने आप में एक शेयर, एक ग़ज़ल होता है।

प्रस्तुत पुस्तक 'बहारे ग़ज़ल' मास्टर जी ने मूल रूप से उर्दू लिपी में लिखी थी। उनके शुभचिंतको व नियमित पाठकों एवं प्रंशसकों की संयुक्त राय से यह निर्णय लिया गया कि चूंकि भारत में, विशेषकर उतरी भारत में फारसी (उर्दू) लिपी के पाठक कम हैं इसलिए उर्दू के साथ–साथ इसका हिन्दी लिप्यांतर भी कर लिया जाए। उर्दू से हिन्दी लिप्यांतर का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। लिप्यांतर

करते करते मैंने हर ग़ज़ल को हर शेयर को बड़े दिल से पढ़ा। मास्टर जी की ग़ज़लों में रवानी, शेयरों में वज़न, रदीफ एवं काफिया का सुंदर प्रयोग देखकर मैं स्वयं न केवल बेहद प्रभावित हुआ बल्कि दंग भी रह गया। कई बार तो गोया मैनें मास्टर जी से चुटकी लेते हुए यह तक पूछ डाला कि मास्टर जी क्या वास्तव में यह शेयर आप ने लिखा है। इस जुमले पर मेरा खुद का लिखा शेयर याद आ गया –

नाचीज़ को इससे ज़्यादा क्या मिले दादे सुखन
वो पूछते हर शियर पे क्या सच है यह तूने लिखा

खैर ...... बहारे ग़ज़ल में मास्टर जी ने उदासी, बेवफाई, निराशा, नई उमंग, हौंसला, आशा, ताज़गी, उम्मीद, सबक, नसीहत, शिकवा– शिकायत, हिजर, वस्ल, मज़बूरी, उल्फत, इल्तजा, इश्के हक़ीकी, इश्के मज़ाजीं आदि हर रंग को छुआ है।

कुछ चुनिंदा शायिर देखिएः–

आए है तिरे शहर में हम बेगानों की तरह
फिरते हैं हम गली–गली हर पल दीवानों की तरह
तेरी निगाहे शौक ने क्यूं हम पे असर न किया
मिलते तो है शाम–औ–सहर पर अनजानो की तरह

एक और अंदाज देखिए :–

जिन्दगी तेरे बिना सुनसान है
शहरे खामोशां है या शमशान है
पत्ता–पत्ता शाख से है झड़ चुका
सारा गुलशन हो रहा वीरान है
आपके आने से पतझड़ जाएगी
फिर बहारें आएंगी अनुमान है

एक इल्तज़ा पूर्ण शियर देखिए :–

रूख से हर पर्दा हटा दो एक बार
दिल की दुनिया को बसा दो एक बार
इंतजारे यार में बैठे है हम
जलवा गर होकर दिखा दो एक बार

एक और शेयर देखें

यह तुम्हारा हुस्न जादू असर है
हम पे भी जादू चला दो एक बार
होश में अमरीक रह न पाएगा
और दीवाना बना दो एक बार

इसके ईलावा एक पुस्तक मे मास्टर जी ने रूबाईयों, नज़्मों को शामिल कर इन विधाओं का स्वाद भी पाठकों को चखाया है। हिन्दो–पाक एकता पर लिखी नज़्म तो अपने आप में एक अलग कृति बन गई है। देखिए :–

हिंदुस्तान और पाकिस्तान भी दोनों वतन हमारे हैं
कायम–दायम रहें खुदारा जानों से भी प्यारे हैं
दो भाई जब हुए अलाहदा इसमें कोई हर्ज़ न था
आपस में लड़ना–भिड़ना किसी का भी यह फर्ज़ न था

ग़ज़लों का पूर्ण आनंद लेने के लिए 'बहारे ग़ज़ल' आपके हाथ में हैं। इसे खोलें और आनंद के समुन्द्र में डूब जाइए। इस समुन्द्र में आपके साथ शियरों की लहरें अठखेलियां करेंगी तथा आप आनंद से भाव विभोर हो जाएंगे, यह मेरा दावा है।

मास्टर अमरीक सिंह जी ने अपनी उम्र के 80 वें बसंत को छूते हुए गज़लों में स्वयं के युवा होने की जो मिसाल पेश की है वह अपने आप में अद्वितीय है। आप यूं ही युवा रहें व इस प्रकार की कुछ और पुस्तकें साहित्य को प्रदान करें यही आपसे आंकाक्षा है। आमीन

– कुलविन्द्र सिंह कथूरिया

शायर का परिचय

नाम	:	मास्टर अमरीक सिंह
जन्म तिथि	:	जून, 1930
जन्म स्थान	:	लालेपुर, जिला गुजरांवाला (पाकिस्तान)
तालीम	:	गुज़ारे लायक मैट्रिक , ज्ञानी
वर्तमान निवास	:	नवां लालेपुर, नज़दीक सब्जी मंडी, ऐलनाबाद, जिला सिरसा – हरियाणा (भारत) मोः 093541-24515

–: अब तक प्रकाशित हो चुकी पुस्तकें :–

1.	पहला उभार (पंजाबी)	:	1960
2.	पंखुड़ियां (पंजाबी)	:	1962
3.	ग़म दी महक (पंजाबी गज़ल)	:	1986
4.	दर्द दा एहसास (पंजाबी गज़ल)	:	1988
5.	मिठि्ठयां मिर्चां (व्यंग्य काव्य)	:	1990
6.	सच्ची तेरी सिफ़त (गीत)	:	1992
7.	जिन मार्ग दिया बताय (महा काव्य)	:	1994
8.	खट–मिठियां मुस्कानां	:	1990
9.	शिअरां दा शीराज़ा	:	1990
10.	दोहों के जाम नेताओं के नाम (हिंदी)	:	1998
11.	दो वार वाघयों पार (सफरनामा)	:	2007
12.	गुर गीतांजली (हिन्दी)	:	2009
13.	बहारे ग़ज़ल (हिन्दी)	:	2010
14.	बहारे ग़ज़ल (उर्दू)	:	2010

बहारे ग़ज़ल

"मास्टर अमरीक सिंह मेरे लिए एक सूफ़ीयाना रंगत में पूरी तरह रंगे हुए फक्कर शायर का नाम है। इंसानियत का पुरख्लूस और दरवेश भावनाओं से लबरेज़ यह एक ऐसा मुजसमां है जिस के अन्दर तक शायरी और इखलाक तारी है। मास्टर जी ने यह सब फन अपने नेक कर्म बर्जुगों और उस्तादों से अपनी नम्रता के दम पर हासिल किया है ऐसा मेरा पुखता अनुमान है। अपनी जिंदगी के तर्जुबात को बजरीए कलम मास्टर जी ने एक दर्जन से ज्यादा अलग अलग मजमूएं हिन्दी/पंजाबी/उर्दू में देकर एक प्रबुद्ध साहित्यकार का प्रमाण दिया है। इन की कलम की साधना का एहसास करते हुए हरियाणा सरकार ने इनको संत तरन सिंह वहमी पुरस्कार देकर नवाजा है। आप ने शुरुआती तालीम उर्दू/फारसी की ही हासिल की थी फिर घर के माहौल और दुनियावीं जिंदगी में जो कुछ भी लिया उसको अगर साहिर लुधियानवी साहिब; मरहूम के अंदाज़ में कहूं तो वही शेयरों की शक्ल में हयाती की झोली में डाल दिया है।"

ग़ज़ल जैसा अंदाज़ ही ज़िंदगी का होने की वजह से इस मजमूएं में उन्होंने बहुत ही सादा जुबान में अपने शेयर कहे हैं और उर्दू में अपनी यह किताब दी है। ग़ज़ल जिस के बारे में मेरा मत भी वही है जो सब मानते है कि यह सिर्फ अरबी फारीस से होते हुए ही उर्दू पंजाबी में आई है। अलबता उर्दू में ग़ज़ल का जो मुकाम है उस की एक खास ही अहिमयत है। ग़ज़ल के बहिर, शेयर, तलफ़ज़ और अरुज़ के हिसाब से मास्टर जी ने कमाल की गजलें कहीं है। हर शेयर अपने आप में मुक्मल, अपने अंदर बैठी बात को कह सकने का अंदाज और फिर क्ता, मक्ता–ए–सानी और मतला तक वहिर को पुरअंजाम तक पहुंचा सकना मास्टर जी के फन और पीरी को हमारे तक पहुंचाता है।

मिसाल के तौर पर देखिए इस दुनियादारी के दौर में ख़ुद को पाक साफ़ कहने वाले कहो यां उस मालिक की बखशंदगी पर यकीन करने वाले को कहो किस नफ़ासत में एक शेयर में पिरोए हैं–

मैं गुनाह जिस से था बख़्शाने गया
खुद गुनाह बख़्शा रहा है क्या करूं।

हाल–ए–दिल किस को सुनाएं या खुदा
सुनने वाला ऐश में ग़लतान है।

मैं इस बात की तशरीह में नहीं पडूंगा कि किसी पुख्ता शेयर के ख़्यालात के साथ मास्टर जी किस कदर हम सफ़र हैं पर आप ख़ुद ही देख लीजीए–

दिल की सारी उम्मीदें ज़िंदा है,
यूं फरिश्ता मौत का टलता रहा।

आपके आने से इस संसार का,
कुछ न कुछ देखो संवरना चाहिए।

सायों के पीछे है हरदम भागता,
क्या इसे पाना है इसको क्या कहें।

किस किस शेयर की बात कहूं मास्टर जी के इस बहार के चमन में हर रंग के, हर खुशबू के फूल मिले हैं। मैं तो अपने प्रवर्दिगार से दुआ करता हूं कि मास्टर जी को लंबी आयू दे और इन की कलम को ज़ोरे कलम और ज़्यादा,

आमीन

पंचकूला – बसंत पंचमी 2010 – सी आर. मौदगिल
निदेशक
हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी

''बहारे ग़ज़ल'' पर विशेष

किसी लेखक, कवि या ग़ज़लकार द्वारा लिखी गई इबारत का मुल्यांकन करके उनके शब्दों पर अपने विचार प्रकट करना उतना ही कठिन है, जितना कि जमीन आसमान की दूरी को नापना। ऐसा ही एक कठिन कार्य मुझे भी मिला। कार्या था क्षेत्र के जाने–माने एवं उच्च श्रेणी के व्योवृद्ध कवि मा. अमरीक सिंह की नई पुस्तक 'बहार–ए–गजल' पर अपने विचार प्रकट करना। अपने विचार प्रस्तुत करने से पहले मैं मानसिक रूप से कुछ विचलित अवश्य हुआ, क्योंकि इतने वरिष्ठ साहित्यकार द्वारा लिखित पंक्तियों का निचोड़ प्रस्तुत करना संभव नहीं तो कठिन जरूर था। फिर भी अपनी पत्रकारिता की मर्यादा को बरकरार रखते हुए मैंने अपना प्रयास अवश्य किया है। मैं सदैव ही मा. अमरीक सिंह की ग़ज़लों व कविताओं को पढ़ने का शौकीन रहा हूं। चाहे समाज का कोई संवेदनशील मुद्दा हो या फिर ज्वलंत, हर एक मुद्दे की खामियों पर कटाक्ष करते हुए मा. अमरीक सिंह को मैंने काफी करीब से देखा है। उनकी कलम का जादू उनकी पंक्तियों में साफ दिखता है। ऐसे में एक के बाद एक पुस्तकें पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे मा. अमरीक सिंह की पुस्तक 'बहारे ग़ज़ल' की मैं। बात करूं तो इसमें फिर से उनकी जादुई कलम सरपट दौड़ती नज़र आई है। इस पुस्तक में विभिन्न रसों से ओतप्रोत ग़ज़लें मास्टर जी के अनुभव व उनकी सोच का जीता–जागता उदाहरण पेश कर रही हैं। प्रस्तुत पुस्तक की ग़ज़लें वास्तव में पाठकों व श्रोताओं पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ेगी। ग़ज़लों के कुछ शेयर तो इतने प्रभावी है कि व्यक्ति शब्दावली में ही रसायुक्त होकर रह जाता है। हर एक पुस्तक को नए, अनोखे , आकर्षक व प्रभावी रूप में उतारने वाले मा. अमरीक सिंह की इस पुस्तक में ज़हां निराशा के स्वर देखने को मिलते है तो उसके साथ–साथ हौसला व आत्मविश्वास

बढ़ाने वाली पंक्तियों की भी कमी नहीं है। यह पुस्तक विशेष रूप से किसी व्यक्ति पर या किसी वर्ग विशेष पर आधारित नहीं है, बल्कि इसमें मानव के जीवन के दौरान आने वाली विभिन्न मानसिक व शारीरिक स्थितियों का वर्णन किया गया है। पुस्तक में मनुष्य की मानसिक स्थितियों जैसे निराशा, उदासी, उम्मीद, ताज़गी आदि को मास्टर जी ने अपने शब्दों को ओजस्वी रूप देकर उतारा है। इसी तरह कहीं–कहीं मज़ाकियां पंक्तियां भी श्रोताओं व पाठकों के समक्ष उन्हें हंसाने से रोक नहीं पाएंगी। हालांकि प्रस्तुत पुस्तक बहार–ए–ग़ज़ल मास्टर जी द्वारा उर्दू भाषा में लिखी गई थी तथा उसका प्रकाशन भी उर्दू भाषा में ही करवाया जाना निश्चित हुआ था, मगर क्षेत्र के सभी साहित्यकारों, पत्रकारों व लोगों द्वारा इसे हिंदी में प्रकाशित करवाए जाने के पुरजोर अनुरोध को देखते हुए मास्टर जी ने इसे देवनागरी लिपि में प्रकाशन की अनुमति प्रदान की है, जिसके लिए मासटर जी को साधुवाद। 'बहारे ग़ज़ल' की पुस्तक देखकर आशा की जा सकती है कि यह पाठकों को बहुत ही पसंद आएगी। अंत में मास्टर जी के उज्ज्वल भविष्य एवं दीर्घायू की कामना करते हुए इतना ही कहूंगा कि

'अल्ला करे ज़ोर–ए–कलम और ज़्यादा'

– डा. एम.पी. भार्गव एम.ए.
(हिंदी साहित्य एवं राजनीति शास्त्र)
वरिष्ठ संवाददाता, पंजाब केसरी
ऐलनाबाद (हरियाणा)
फोन 01696-220257 (का.)
01696-222357 (नि.)
मो. 093154-41987

माहौल से रू–ब–रू ग़ज़लें

मास्टर अमरीक सिंह जी से मेरा सामाजिक और साहित्यक वास्ता काफी पुराना है। उन्हें करीब से देखने समझने का मुझे सौभाग्य प्राप्त है। पहरावे में सादगी, मन में संवदेनशीलता और संवादीय सपष्टता उनकी दिनचर्या की तरह ही उनके साहित्य में भी उभरते है। वह मेहनती, ईमानदार, लगन के पक्के माहौल में झांक सकने के काबिल, कुल मिलाकर उनकी प्रस्तुति कलम के पीछे खड़े उनके किरदार की झलक दे जाते हैं। साहित्यकार की समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी और जवाबदेही मास्टर जी की रचनाओं के विशेष गुण कहे जा सकते हैं।

नावल को छोड़कर शायद ही कोई ऐसी विधा हो जिसे मास्टर जी ने कलम के हवाले न किया हो। सोने पे सुहागा यह कि जिस विधा को भी उन्होंने अपनाया है उस पर उनको अधिकार प्राप्त है। लेखन कार्य में निरन्तरता और लिखे हुए को पुस्तक का रूप देना उनकी लगन की गवाही देने में सक्षम हैं। शायद यही कारण है कि उनके मामा, महान लेखक संत तरन सिह वहमी जी को छोड़ कर इस क्षेत्र का विशेष करके नामधारी समाज का कोई अन्य लेखक उनसे अग्रिम पंक्ति में बैठा दिखाई नहीं देता। यह भी उल्लेखनीय है कि वह केवल नामधारी संप्रदाय के लेखक नहीं है, बलकि उन्होंने पंजाबी, हिन्दी और उर्दू साहित्य में प्रशंसनीय योगदान डाला है। उनकी ग़ज़लें, सफ़रनामे, कविताएं तथा आलेख आदि पर यदा कदा गोष्ठियां होती रहीं हैं तथा पाठकों द्वारा सराही गई हैं।

'बहारे गजल' की बात करें तो शामिल ग़ज़लों की ख़ूबी उनकी सादगी और रवानी है। भाषागत शब्द जाल कहीं भी विचारों को फांसता नहीं। संप्रेषण सीधा और स्पष्ट है।

मास्टर अमरीक सिंह की 1992 में छपी गीत पुस्तिक 'सच्ची तेरी सिफ़त' का पाठ उनकी ग़ज़लों को समझने में मददगार साबित हो सकता है। हम देखते हैं कि उन्होंने अपने सतगुरू जी, पूजनीय जगजीत सिंह जी को महबूब के रूप में भी देखा है। कहीं वह सय्यद बुल्लेशाह की तरह खुल खेलते हैं तो कहीं सुलतान बाहू की बिछोह–हूक उज़ागर होती है। उनका इश्क मज़ाजी इश्क हकीकी की उच्चाईयां छूता प्रतीत होता है:–

'मुझसे पूछा जब किसी ने, इतना खुश तूं क्यों हुआ,
हंस कर मैंने कहा, 'अब मिल गया है ग़म गुसार'।
इक अंधेरा दिल में जो छाया हुआ था देर से,
हो गई तारीकियां सब दूर, जब पाया दीदार।'

'अपनी मिसल आप है वह हर तरह,
कोई भी तशबीह नहीं मतलूब है।'

बहुत सी ग़ज़लों के बहुत से शियर ऐसे हैं जिनकी व्याख्या करना न तो मतलूब है और न ही बस की बात। केवल और केवल उनसे तुत्फ अंदोज़ हुआ जा सकता है। देखिए:–

''दिल के अरमानों का इक गुलज़ार भी,
उम्र भर ही फूलता फलता रहा।
मेरे हमदर्दों का झुंड ऐसा भी था,
मूंग सीने पर सदा दलता रहा।
कुल मिला कर खूब गुज़री है उम्र,
कद्र क्यों 'अमरीक' न करता रहा।''

कहीं वह एक–आध शियर से ही पूरी कहानी कह जाते हैं जिसका आप कल्पना का पुट लगा कर मज़ा ले सकते हैं–

'आप कहते हैं कि गुस्से में नहीं,
तन रही हैं आप की फिर क्यों भवें।'
'बोलना भी जो पसंद करते न थे,
कह रहे हैं मैं नहीं नाराज अब।

उनकी ग़ज़लों में तीखी नोंक झोंक, उलाहने, हिजर–ओ–वसल और सूफियाना अंदाज इन्हें पठनीय एवं मकबूल बनाने में सक्षम है। इस दुआ

के साथ कि–

पैर तुम्हारे हों ज़मीं पर और सर आकाश में
बढ़ते रहिए और आगे और आगे दोस्तो।

आशा करता हूँ कि साहित्य जगत बहारे ग़ज़ल को खुश आमदीद कहेगा।

– डा॰ जी.डी. चौधरी
ग़ैर सरकारी मैंबर
हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी, सिरसा।
मोब. 097290-06245

प्राप्त सम्मान

1. श्री सतगुरू जगजीत सिंह जी द्वारा श्री भैणी साहब में अनेकों बार सम्मानित
2. चौ. भागीराम पूर्व मंत्री हरियाणा के द्वारा टैगोर थिएटर चंढीगढ़ में।
3. हरियाणा के मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा द्वारा 2008 में 'संत तरन सिंह वहमी एवार्ड' प्रदान किया जिसमें 51000 रू., ताम्रपत्र, शाल और हरियाणा रोडवेज में जीवन पर्यन्त निशुल्क पास प्रदान किया।
4. कई सरपंच साहबान ने बारहा यादगारी चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।
5. 30-08-2009 को कैथल हरियाणा में साहित्य सभा कैथल ने 2100 रू., समृति चिन्ह, शाल व प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया।
6. हरियाणा पंजाबी साहित्य अकैडमी पंचकूला की तरफ से अनेकों बार सम्मान प्राप्त
7. विज्ञान उच्च विद्यालय, गुजरांवाला (पाकिस्तान) से मुख्य अतिथि के रूप में सम्मानित
8. उपायुक्त गुजरांवाला के द्वारा पाकिस्तान में स्थित मेरे पुराने स्कूल (महाराजा रणजीत सिंह के पिता सः महा सिंह के नाम पर ये स्कूल था।) मैं इसी स्कूल में पड़ता रहा हूँ। इस स्कूल के 200 साला जश्न में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित व सम्मान किया गया।
9. पंजाब यूनिवर्सिटी लाहौर (पाकिस्तान) के गुजरांवाला कैम्पस में सम्मानित किया गया मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की।

ग़ज़ल

जाने वाले तो चले ही जाएंगे,
रोकने से वो न रूकने पाएंगे।

उनके जाने से बढ़ेंगी उलझनें,
हम अकेले किस तरह सुलझाएंगे।

आपका चिहरा चमकता देखकर,
दिल जो भर आए तो क्या समझांएगे।

इस उम्र में लाख हैं मजबूरियां,
आप होते पास क्यों घबरांएगे।

उनकी यादें खिल उठेंगी फूल बन,
आसमां पर जब भी बादल छांएंगे।

इस हकीकत से करें इनकार क्यों,
जब भी आएंगे तो खुशियां लाएंगे।

दिल के दरवाज़े खुले है रात दिन,
हम खड़े होंगे वो जब भी आएंगे।

जिंदगी का कुछ भरोसा तो नहीं,
उनके आने तक यह दिल बहलाएंगे।

छोड़कर वह जा रहे रोते हुए,
है यकीं जाकर पछतांएगे।

प्यार इक अहसास है कब्जा नहीं,
हम ख़्यालों में उन्हे बैठाएंगे।

कोयलों व बुलबुलों के साथ हम,
गीत बस उनके हमेशा गाएंगे।

क्या करें 'अमरीक' कुछ सूझे नहीं,
कब हमारे ज़ख्म वो सहलाएंगे।

ग़ज़ल

घुप अंधेरा छा रहा है क्या करूं,
दिल मेरा घबरा रहा है क्या करूं।

इक मुअमा बन गया जीवन मिरा,
उलझता ही जा रहा है क्या करूं।

समझ बैठा था गुलिस्तां मैं जिसे,
नज़र सहरा आ रहा है क्या करूं।

जिससे मैनें की वफ़ा थी उम्र भर,
अपना बन ना पा रहा है क्या करूं।

दर्दे दिल से आशनाई बन गई,
तन बदन को खा रहा है क्या करूं।

दास्तानें ग़म सुनाई जब उसे,
वो खड़ा मुस्का रहा है क्या करूं।

हर कदम गहराइयों में फिसल कर,
दिन–ब–दिन गहरा रहा है क्या करूं।

मैं गुनाह जिस से था बख़शाने गया,
खुद गुनाह बखशा रहा है क्या करूं।

सब्र कर अमरीक से मैनें कहा,
हौसला पर ढा रहा है क्या करूं।

ग़ज़ल

ज़िंदगी बिन आपके वीरान है,
जिस तरह इस शहर का शमशान है।

गुलशनों से रोनकें ग़ायब हुई,
आ गया जैसे कोई तूफ़ान है।

है बहारों में ख़िजां का ही गुमां,
देखकर यह दिल हुआ हैरान है।

फूल तो क्या शजर भी उखड़े सभी,
दहर की बिगड़ी ये कैसी शान है।

हाल–ए–दिल किस को सुनाएं या खुदा,
सुनने वाला ऐश में ग़लतान है।

हम हैं ग़र काफ़िर तो मोमिन कौन है,
कौन हिंदू कौन मुसलमान है।

दुनिया वालों से ज़रा यह पूछिए,
बे मुरव्वत क्यों हुआ इन्सान है।

तौबा हमने की हो पीने से तो क्या,
मुफ़त की पीने में क्या नुकसान है।

बारहा समझा लिया 'अमरीक' ने,
दिल तो हुस्न–ए–यार पर कुरबान है।

ग़ज़ल

देखिए कैसी अनोखी बात है,
बादलों बिन हो रही बरसात है।

आपसी नज़रों ने करिश्मा कर दिया,
रोज़–ए–रोशन की तरह हर रात है।

वस्ल के पल यूं अचानक मिल गए,
दी खुदा ने जैसे यह सौग़ात है।

उनका आना भी तो है इक मौज़ज़ा,
सज रही सारी ही कायनात है।

बागबां भी है खड़ा हैरान सा,
जल्द क्यूं पतझड़ ने खाई मात है।

खुश नसीबी ने फ़तह पाई है अब,
बदनसीबी हार गई बद ज़ात है।

ग़ज़ल

कारवाने ज़िंदगी चलता रहा।
दर्द भी सीने में ही पलता रहा।

रात भर हम कह न पाए हाले दिल,
चांद ने ढलना ही था ढलता रहा।

इंतजारे यार का मद्धिम दीया,
आंधियां आईं मगर जलता रहा।

आप आए भी मिले बिन चल दिए,
दिल कभी जीता रहा मरता रहा।

दिल की सारी ही उम्मीदें ज़िंदा हैं,
यूं फ़रिश्ता मौत का टलता रहा।

जो हमारे हो न पाए उमर भर,
दिल सदा उनका ही दम भरता रहा।

मैं दर–ए–यारां पे हूं कब से खड़ा,
दी सदाएं पर नहीं खुलता रहा।

मोमबती की तरह यूं उमर भर,
मैं गमें यारां में ही घुलता रहा।

याद है मुझको मेरा वो आशियां,
उजड़ कर भी बारहा बसता रहा।

है ये दिल 'अमरीक' भी किस जिन्स का,
गम में भी जो फूलता फलता रहा।

ग़ज़ल

दिल दीवाना हो गया पाया है जब दीदार–ए–यार,
ज़िंदगी में थी ख़िज़ां अब आ गई फिर से बहार।

उनका चिहरा चांद सा देखा है जब नज़दीक से,
तन बदन ठंढ़ा हुआ माहौल की बदली नुहार।

इक अंधेरा दिल में जो छाया हुआ था देर से,
हो गई तारीकियां सब दूर जब पाया दीदार।

सैंकड़ों शुबहात दिल में पल रहे थे आज तक,
सामना उनका हुआ जब मिट गया गर्द–ओ–गुबार।

कड़वे बोलों ने मेरी रग रग में कड़वाहट भरी,
आपके होंठों से निकले शहद ने सब दी उतार।

गम के बादल आसमां पर छा रहे थे जो कभी,
जब उठा पर्दा तो मौसम हो गया है खुश गवार।

मुझ से पूछा जब किसी ने इतना खुश तूं क्यू हुआ,
हंस कर मैनें कहा अब मिल गया है गम गुसार।

अब तो ऐ 'अमरीक' यह ख़्वाहिश है दिल में एक ही,
आप यूं ही उम्र भर करते रहें बस हम से प्यार।

ग़ज़ल

खुदाया ज़माने को क्या हो गया है,
सुकूने कलब ही हवा हो गया है।

यह रहबर ही अब रहज़नों से हैं बदतर,
उसूलों का गुलशन फ़ना हो गया है।

किसे हम नया राज़दां अब बनाएं,
जो था राज़दां बेवफा हो गया है।

तमन्ना तूं इंसाफ की रख रहा है,
कि मुर्नासिफा का इमा दफ़ा हो गया है।

ऐ इंसान इंसानियत ढूढते हो?
लफ़्ज़ यह जुगत से सफा हो गया है।

अरे दुनिया वालो संभल जाओ यारो,
वो पर्दे से अब रू नुमा हो गया है।

मैं कुर्बां हूं उन पे वो जाने ना जाने,
मेरा फर्ज़ जो था अदा हो गया है।

ऐ 'अमरीक' फ़ैशन में वो दौर आया,
कि कपड़ा ही तन से जुदा हो गया है।

ग़ज़ल

दर्द–ए–दिल बेदर्द कम होता नहीं,
रात भर है जागता सोता नहीं।

चल रही बादे सबा ने यूं कहा,
कौन है जो इश्क में रोता नहीं।

वो नहीं आशिक जो हिजर–ए–यार में,
आंसुओं से अपना मुंह धोता नहीं।

उसकी आमद दुनिया में किस काम की,
जौहर–ए–इनसानियत जो बोता नहीं।

किस तरह लाल–ओ–जवाहर पाओगे,
गहरे सागर में लगा गोता नहीं।

समझ बिन मैं बोल दूं जो कुछ कहो,
मैं भी इक इंसान हूं तोता नहीं।

मेरी मर्ज़ी है मैं जो कुछ भी करूं,
इस ज़माने से तो समझौता नहीं।

ग़ज़ल

तुम मेरे हर ख्वाब की ताबीर हो,
हर मेरी ख्वाईश की तुम तकदीर हो।

उलझनें इतनी हैं बस गिनती नहीं,
इनको सुलझाने की कुछ तदबीर हो।

ढह रहे इंसानियत के महल जो,
फिर से इन खंडहरात की तामीर हो।

ये कदम आगे को ही उठते रहें,
पांव में चाहे पड़ी ज़ंजीर हो।

आसमां धरती को जो है छू रहा,
देखना नज़रों की ना आख़ीर हो।

खुद बनाई है ख़ुदां ने आपकी,
दुनियां में शायद कोई तस्वीर हो।

लाख समझाया समझता ही नहीं,
किस तरह बस में दिले दिलगीर हो।

बेवफ़ा न मैं ही था न आप थे,
किस ने फिर छोड़ा जुदाई तीर हो।

आप बिन 'अमरीक' रह न पाएगा,
फिर मुलाकातों में क्यों ताख़ीर हो।

ग़ज़ल

जुलफ़ों को अपने हाथ से छुआ है मैनें जब से,
रेशम भी लग रहा है अब लोहे का तार तब से।

देखा तो देखता ही रह गया कसम से,
माथे पे एक जुल्फ जो लहरहा रही है कब से।

ये हुस्न ये जवानी इक झलक जब से पाई,
मस्ती में झूमता हूं ना ही होश आया तब से।

साया-ए-जुल्फे यार ने ठंडक है बखशी ऐसी,
सारी उम्र के वासते मांगा है साया तब से।

तुझ से मिले तो औरों से मिलना खत्म हुआ,
बिल्कुल किनारा कश हुआ इतराफ़ और सब से।

मस्ती में झूमते हुए वो आ रहे हैं संभलो,
देखा जो उनकी शान को निकला न लफ़्ज़ लब से।

अमरीक पर हुआ है यह जादू असर कुछ ऐसा,
दीवाना वार फिरता है दिन में भी और शब से।

ग़ज़ल

मेरे हम नवाओ ज़रा पास आओ,
अंधेरे में कोई तो रस्ता दिखाओ।

उलझते हुए उम्र सारी है गुज़री,
कभी चैन आया दो पल तो बताओ।

कहेगा ज़माना क्या खुद कह रहा हूं,
दीवाना हूं पागल न कह के बुलाओ।

मेरी जिंदगी इक मुइमा बनी है,
करो कोई चारा इसे समझ पाओ।

जवानी के दिन बीत जाएं न ऐसे,
इन्हे ख़िदमत–ए–खलक में ही लगाओ।

कोई क्या कहेगा कभी मत ये सोचो,
लगन अपनी में न कभी कोई लाओ।

हमेशा रवानी हो दरियाओं जैसी,
कहीं आना चाहिए न इस मे ठहराओ।

ऐ 'अमरीक' चलना ही है जिंदगानी,
चलो और हर पल मधुर गीत गाओ।

ग़ज़ल

कौन कहता है वह हम से दूर है,
हर तरफ फैला उसका ये नूर है।

कुछ असर दीदार का ऐसा हुआ,
हो गया माहौल ही मख़मूर है।

ज़िक्र अहसानों का अब हम क्या करें,
दीन औ दुनिया में हर इक मशकूर है।

वह जहां भी रह रहा है ठीक है,
वह जुदा रहने पे ही मजबूर।

है हमारा फ़र्ज़ मत छोडें वफ़ा,
वह जफ़ाओं के लिए मशहूर है।

इस हकीकत से जहां है आशना,
छुप न पाएगा वह कोहि नूर है।

सूरत–ओ–सीरत में है वो बेमिसाल,
लगता है जन्नत की जैसे हूर है।

हज़रत–ए मूसा को मिला अल्ला यहां,
यह ही ऐ 'अमरीक' कोहेतूर है।

ग़ज़ल

हो गया सब से जुदा तेरे लिए,
कर न पाया क्या बता तेरे लिए।

तुम क्या जानों मैने तेरे हिज्र में,
पाई है कितनी सज़ा तेरे लिए।

जुस्तजू में दर–ब–दर फिरता रहा,
बहुत ऊंची दी सदा तेरे लिए।

हर शमा देती है जलकर रौशनी,
दिल हमारा भी जला तेरे लिए।

कुछ कभी तुझ में नज़र आती नहीं,
मांगनी है क्या दुआ तेरे लिए।

तू बता किस किस का अब मैं नाम लूं,
हो गए हैं सब जुदा तेरे लिए।

पूछ मत 'अमरीक' पागल क्यूं हुआ,
फिर रहा है भटकता तेरे लिए।

ग़ज़ल

बड़ा ही खतरनाक है यह ज़माना,
कभी इसने दिल वालों का दिल न जाना।

कहो! कोई दिन अपने कैसे गुजारे,
है काम इसका दिल वालों का जी जलाना।

जिसे देखो दिल को पकड़ कर है बैठा,
यह दिल हो या हो दर्द का इक खज़ाना।

यह उल्फ़त मुहब्बत वफ़ा मेहरबानी,
ख़तम सब हुए हैं हर इक है बेगाना।

किसे हाल–ए–दिल यारो अपना सुनाएं,
वह सुन लेते हैं पर कहें है फ़साना।

छिपाते रहे उम्र भर राज़–ए–दिल को,
वही संग दिल को पड़ा है सुनाना।

ऐ 'अमरीक' मज़बूरियां हों हमारी,
हम इस दर्द में तोड़ पाए वफ़ा ना।

ग़ज़ल

दिल है दीवाना इसे अब क्या कहें,
इस की यह दीवानगी कब तक सहें।

कहने को तो दिल है कतरा खून का,
बस में न आए अगर तो क्या कहें।

वह हमें अब बे वफ़ा कहते हैं क्यूं,
याद जब आती है तो आंसू बहें।

बारहा गिरते रहे उठते रहे,
कम न हो गर ठोकरें तो क्या करें।

दिल ने चाहा पास उन के ही रहें,
हो न किस्मत में तो आहें क्यूं भरें।

आप कहते हैं कि गुस्से में नहीं,
तन रही हैं आप की फिर क्यूं भवें।

दोस्त जितने ये हुए हैं बेवफ़ा,
अब अकेलेपन से हम काहे डरें।

कोस मत दिल को अरे 'अमरीक' तू,
हौंसला इस का बढ़ा कर ग़म हरें।

ग़ज़ल

आप आ जाएं बनेगी बात फिर।
पांएगे हम कीमती सौग़ात फिर।

पतझड़ों में फिर बहारें आएंगी,
चांदनी होगी अंधेरी रात फिर।

खत्म होंगी ग़मो फिक्र की आंधियां,
बदल जांएगे सभी हालात फिर।

बिखर खुशियां जाएंगी माहोल में,
उजड़ कर बस जाएंगे बागात फिर।

देखते ही हम उन्हे रह जाएंगे,
सब ख़त्म हो जांएगे शुबहात फिर।

हम जिंएगे फिर बड़े आराम से,
उलझनें खा जाएंगी सब मात फिर।

सपनों की ये ही सही ताबीर है,
आमद–ए–यारो ने दी है दात फिर।

किस जुबां से हम करेंगे शुक्रिया,
बदल दी 'अमरीक' तेरी ज़ात फिर।

ग़ज़ल

ढूंढते हैं हम जिसे शाम–ओ–सहर,
मेरी हालत की नहीं उसको खबर।

आए या न आए उस का क्या पता,
ख़त्म होता जा रहा मेरा सबर।

उसकी राहें आज तक हैं देखते,
मर न जाएं जो न आया वह अगर।

भूल कर सारे वह वादे चल दिया,
हम अभी तक भी खड़ें हैं मुंतज़र।

हिज्र की यूं ही चली जो आंधियाँ,
रह न जाएगा कहीं भी इक शजर।

चीर कर सीना दिखाता बारहा,
देखता ही वह नहीं है इक नज़र।

यह है तै कर लिया 'अमरीक' ने,
इंतजार–ए–यार होगा ता हशर।

ग़ज़ल

आप आयेंगे बहारें आयेंगे,
आसमां पर फिर घटाएं छाएंगी।

तितलियां करती फिरें अठखेलियां,
हर किसी को नाचना सिखलांएगी।

बुलबुलें छेड़ेंगी नग़में प्यार के,
हर शजर की टहनियां बल खाएंगी।

बदल जाएगी कैफियत दहर की,
तब हंसीं शाम–ओ–सहर बन जाएगी।

खत्म होगें दर्द–ओ–ग़म के सिलसिले,
फिर मुस्सरत सहन में मुस्काएंगी।

कौन जाने कब वो आंएगे मगर,
उनकी यादें ही तो दिल बहलाएंगी।

इंतजार–ए–यार में क्या लुतफ़ है,
यह ही घड़ियां पुर मज़ा बन जाएगी।

ग़ज़ल

दूर से आई तिरी आवाज़ जब,
बज उठे सारे सुरीले साज़ तब।

खत्म हो जाएगा अब दौर–ए–ग़मां,
आज से होगा नया आग़ाज़ तब।

अपनी हस्ती पर कभी नालां थे जो,
कर रहे हैं सब इसी पे नाज़ अब।

तूने यह कैसा करिश्मा कर दिया,
खुल रहे है दिल के सारे राज़ अब।

ढूंढते थे हम जिसे शाम–ओ–सहर,
बन गया वो जी मिरा हमराज़ अब।

कोई भी शिकवा शिकायत न रही,
मिट गए सारे मेरे एतराज़ अब।

बोलना भी जो पसंद करते न थे,
कह रहे हैं मैं नहीं नाराज़ अब।

तेरी नज़रों का तिलस्म जो हुआ,
मिल गए 'अमरीक' को एज़ाज़ सब।

या ख़ुदा कैसी यह तबदीली हुई,
समझते हैं वह हमें मुमताज़ अब।

रूबाईयाँ

फूल को बस सूंघीए मत तोड़िए,
इस को टहनी पर उम्र भर छोड़िए,
टूट कर टहनी से यह मुरझाएगा,
हुसन इस के से मुंह न मोड़िए।

ooo

हार जो फूलों का गले पहनाया गया,
तोड़ कर टहनी से बनवाया गया,
टूट कर टहनी से यह सब मर गए,
हार मुर्दों का ही लटकाया गया।

ooo

फूल टहनी पे ही जब मुरझाएंगें,
बीज बन मिट्टी में यह मिल जाएंगे,
अगले मौसम में उगेंगे बीज फिर,
फूल बन कर फिर बहारें लाएंगे।

ooo

जब तलक टहनी पे रहते फूल हैं,
बात खुशियों की ही कहते फूल हैं,
तोड़ने से महक सब उड़ जाएगी,
वैसे चशमा–ए–महक बहते फूल हैं।

ooo

ग़ज़ल

जिंदगी में कुछ तो करना चाहिए,
कुछ भलाई करके मरना चाहिए।

नेकीयां ही काम आखिर आंएगी,
हर बुराई से ही डरना चाहिए।

संकटों का है समन्दर यह जहां,
कभी तो इन से उभरना चाहिए।

पार नदियों से अगर/जाना पड़े,
डर बिना उस में उतरना चाहिए।

आपके आने से इस संसार का,
कुछ न कुछ देखो संवरना चाहिए।

अपने बारे में सिर्फ़ न सोचना,
दूसरों का दुख भी हरना चाहिए।

ये जहां फ़ानी है अै 'अमरीक जब,
मरने से फिर क्यूं बिदकना चाहिए।

ग़ज़ल

उनकी आमद का भी करिश्मा खूब है,
हर खुशी उन से हुई मनसूब है।

जिसको देखे दिल से राहत मिले,
कसम है ऐसा मेरा महबूब है।

बात करता है तो झरते फूल हैं,
खुश गुलू है और खुश असलूब है।

उनके हुस्न जाविदां से यह जहां,
मशहूर है मखमूर है मरग़ूब है।

अपनी मिसल आप है वह हर तरह,
कोई भी तशबीह नहीं मतलूब है।

ग़ज़ल

बदल रूख तू ऐ हवा,
कर न लोगो पर जफ़ा।

ख़ुद ग़रज़ माहौल है,
हो न पाएगी शफ़ा।

तंग हर इंसान है,
है सुकूं अब बे वफ़ा।

ख़ुद प्रस्ती की घटा,
है रही हर सू ही छा।

हर तरफ़ है घुटन सी,
पर नहीं है देर पा।

तूफ़ान की आमद है यह,
आएगा इक ज़लज़ला।

खत्म होंगे ग़म भी
दर्द होगा हर दफ़ा।

बात इक 'अमरीक' सुन,
होगी हाजत हर रफ़ा।

ग़ज़ल

ऐ घटाओ झूम कर आओ ज़रा,
इस दिले ग़मगीन को बहलाओ ज़रा।

लाख समझाया समझता ही नहीं,
आओ इस को तुम ही समझाओ ज़रा।

दिन–ब–दिन ही उलझनें तो बढ़ रहीं,
एक उलझन को ही सुलझाओ ज़रा।

जानीए मत इश्क है दीवानगी,
इसका मतलब तो समझ पाओ ज़रा।

ज़ख़्म सीने में हज़ारों हैं मगर,
इनमें से कुछ ही सहलाओ ज़रा।

दोस्तों की वैसे तो भरमार है,
इक भी हो हमदर्द दिखलाओ ज़रा।

जी सकेगा कौन इनके प्यार बिन,
ऐसा कोई शख़्स तो लाओ ज़रा।

दर्द का है इक समंदर सामने,
पार कर पांऊ यह सिखलाओ ज़रा।

ग़ज़ल

अै हवाओ आज अपने साथ ले चलो,
घुप्प अंधेरा है पकड़ कर हाथ ले चलो।

मैं खुले आकाश में हूं उड़ना चाह रहा,
कर दो पूरी है मामूली बात ले चलो।

माहौल की इस घुटन से तंग आ चुका हूं मैं,
बदल कर सारे मेरे हालात ले चलो।

हर किस्म की महक से भरपूर हैं मेरे सनम,
मेरे ग़म की भी तो इक सौग़ात ले चलो।

चांदनी रातों में यह मौसम सुहाना आज है,
हो न जाए तन्हा ही प्रभात ले चलो।

दम न घुट जाए मिरा इस कफ़स में,
खोल कर पिंजरा उड़ा कर साथ ले चलो।

ग़ज़ल

आए हैं तेरे शहर में अब हम बेगानों की तरह।
फिरते है हम गली गली हर पल दीवानों की तरह।

तेरी निगाहे शौक ने क्यूं हम पे असर न किया,
मिलते तो हैं शाम–ओ–सहर पर अनजानो की तरह।

उनको सदाऐं बहुत दीं पर वो न टस से मस हुए,
ख़ामोश ही बैठे रहे वो कोहस्तानों की तरह।

दिल की गहराई तलक न पंहुच पाए आज तक,
ताला लगा हो जिन पे वो हैं उन दुकानों की तरह।

सर ज़मीन–ए–हुस्न पर सदियों से हैं छाए हुए,
वो हुकूमत कर रहे है हुकुमरानों की तरह।

मैं भी तो ऐ 'अमरीक' आखिर हूं तो इक इंसान ही,
क्यूं नहीं वो पेश आते मेहरबानो की तरह।

ग़ज़ल

मत छेड़ अै बाद–ए–सबा मजबूर हूं बेज़ार हूं।
अब दो हवा मत खाह मखाह बुझता हुआ अंगार हूं।

इक ढह रही दीवार हूं गिरता हुआ मीनार हूं,
जिसमें न कुछ बाकी रहा ख्वाहिशात का अंबार हूं।

बुझती हुई शमां हूं मैं गुजरा हुआ समां हूं मैं,
कांटे भी जिस में न रहें उजड़ा हुआ दियार हूं।

मैं कटी पतंग हूं हारी हुई इक जंग हूं,
लहरों पे बहती जा रही किश्ती बिना पतवार हूं।

मंज़िल मेरी कोई नहीं किसी से भी दिलजोई नहीं,
कहां अब रहा हुसीन हूं महफिल का न श्रृंगार हूं।

हालत मेरी अजीब है वह वक्त अब करीब है,
ग़म फिक्र होंगे दूर जब इक थम चुकी रफ़तार हूं।

उम्रे दराज़ मांग ली सूली पे जान टांग ली,
जो कभी न पूरा हो सका 'अमरीक' वह इकरार हूं।

ग़ज़ल

जिंदगी तेरे बिना सुनसान है।
शहर–ए–ख़ामोशां है या शमशान है।

पत्ता–पत्ता शाख से है झड़ चुका,
सारा गुलशन हो रहा वीरान है।

आपके आने से पतझड़ जाएगी,
फिर बहारे आएंगी अनुमान है।

वो जहां जाए सजा दे महफिलें,
इक अकेलापन या मेरी जान है।

दौर–ए–फैशन का रवैया देख कर,
पूछा यह भारत या इंगलिशस्तान है।

सड़क पर यह लोग हैं जा रहे है,
इनमें मरदो ज़न की क्या पहचान है।

लम्हा–ए–राहत मिला न उम्र भर,
बात यह बाय से इतमिनान है।

मत कहो 'अमरीक' उनको बेवफा,
यह मुहब्बत का ग़लत उनवान है।

ग़ज़ल

सनम की मोहब्बत ने जादू दिखाया।
मुझे एक इसां से शायर बनाया।

उन्हें देख कर हम सभी कुछ हैं भूले,
ये क्या हो गया है हमें ऐ ख़ुदाया।

वो क्या जाने दिल अपने पर कैसी गुजरी,
''चले जाएंगे'' जब उन्होने सुनाया।

तिरे नाज़ो नखरों पे सब कुछ फ़िदा है,
मुझे देख कर तू है जब मुस्कुराया।

अरे जाने वालो ज़रा मुड़ के देखो,
चला आ रहा चांद सा इक है साया।

शुरू हो गई हैं नज़र की बौछारें,
बड़ी मुश्किलों से संभल मैं हूं पाया।

ऐ 'अमरीक' छोड़ो हुस्न के फ़साने,
तेरे जैसे बहुतों को उसने सताया।

ग़ज़ल

रूख से हर पर्दा हटा दो एक बार,
दिल की दुनिया को बसा दो एक बार।

इंतजार–ए–यार में बैठे हैं हम,
जलवा गर होकर दिखा दो एक बार।

अपना यह पुरनूर चिहरा फेर लो,
रोशनी हर सू फैला दो एक बार।

नगमा–ए–ग़मगीन जो गाया था कभी,
फिर वही नगमा सुना दो एक बार।

नज़र–ए–नूरानी से किस्मत बदल कर,
मौज़ज़ा कोई दिखा दो एक बार।

अपने ही गिरेबान में सब कुछ तो है,
बस जरा गर्दन झुका दो एक बार।

ज़िंदगी में मर्तबा गर चाहिए,
अपनी हस्ती को मिटा दो एक बार।

ग़म के दरिया में हूं बहता जा रहा,
डूब जाने से बचा दो एक बार।

यह तुम्हारा हुस्न जादू असर है,
हम पे जादू चला दो एक बार।

होश में 'अमरीक' रह न पाएगा,
और दीवाना बना दो एक बार।

ग़ज़ल

तुम मुझे बिल्कुल भुला न पाओगे,
दिल नहीं समझेगा क्या समझाओगे।

जिंदगी में हैं हजारों उलझनें,
किस तरह सब को यूं सुलझाओगे।

दिल के दरवाज़े खुले रखते है हम,
तुम न जाने कब कहां से आओगे।

चल रही उलटी ज़माने की हवा,
इस हवा से तुम नहीं बच पाओगे।

कब तलक देखेंगे राहें आपकी,
ता कयामत यह नहीं बतलाओगे।

मेरे हाले ज़ार को तुम देखकर,
बेवफ़ाई अपनी पर शर्माओगे।

आपकी यादें है सरमाया मिरा,
लूट कर यह भी तो न ले जाओगे।

इश्क में 'अमरीक' तो अन्जान है,
क्या सलीका इस को अब सिखलाओगे।

ग़ज़ल

ज़िंदगी कब तक रहेगी मुंतजिर,
हो रहा है सफ़रे उमर तो मुखतसर।

कौन जाने कब वो होंगे जलवागर,
हो रही फरियाद भी अब बेअसर।

ढूंढ कर लाएं कहां से हम उन्हें,
ख़ाक छानी हमने है शाम–ओ–सहर।

क्या हुआ गर आज हैं गोशा नशीं,
हम रहे हैं उनके मंजूर–ए–नज़र।

कब कोई इंसान करिश्मा कर ही दे,
यह तो है हालात पर ही मुनहसर।

आओ कि दो दिन गुजारें लुत्फ़ से,
जिंदगी यूं ही न हो जाए बसर।

पी लिया जामे मुहब्बत जिस ने भी,
वो दीवाना ही रहेगा उम्र भर।

पास कुछ रखा नहीं 'अमरीक' ने,
कर दी हर इक चीज ही उनकी नज़र।

रूबाईयात

इंतज़ार–ए–यार में जीते रहेंगे हशर तक,
सासों का ज़हर हिज्र में पीते रहेंगे हशर तक,
किस को सुनाएं हाले दिल ग़म ख्वार कोई भी नहीं,
ज़ख़्म–ए–जिगर हम बैठ कर सीते रहेंगे हशर तक।

०००

किस्मत की बात है कि दो दिल मिल न पाए आज तक,
सावन में भी आकाश पर बादल न छाए आज तक,
हम क्या करें क्या न करें कुछ समझ में आता नहीं,
जीवन गुज़ारें किस तरह जा कर न आए आज तक।

०००

कौन समझाए उन्हें दिल तोड़ना अच्छा नहीं,
दिल लगा कर मुंह किसी से मोड़ना अच्छा नहीं,
हमसे नफ़रत और ग़ैरों से मुहब्बत हर लम्हा,
अपनों को ग़ैरों की ख़ातिर छोड़ना अच्छा नहीं।

०००

चश्मा बनी है चश्में आंसू हैं बहते जा रहे,
ताने जो लोग दे रहे हम सब हैं सहते जा रहे,
हंसते हैं लोग रात दिन हालत हमारी देख कर,
हम हैं उनके वो हमारे फिर भी कहते जा रहे।

०००

कौन जाने कब वो आ जाएं अचानक बज़्म में,
देखना इक ताज़गी होगी मेरी हर नज़्म में,
झूम जाएगा जहां मस्ती में चारों तरफ से,
शादियाने बज उठें ना झूठ मेरी कलम में।

ooo

आपके आने की खबरें रूत सुहानी दे रही,
चांदनी रातों की ठंढ़क है निशानी दे रही,
है गुलिस्तानों में रौनक फ़ूल सब यौंवन पे हैं,
आज बुलबुल अपने नग़मों को रवानी दे रही।

ooo

आप न आए तो हम फिर जी सकेंगे किस तरह,
उम्र भर हम ज़हर–ए–हिजर पी सकेंगे किस तरह,
ना उम्मीदी के समंदर से उभर न पाएंगे,
फट रही चादर उम्र की सी सकेंगे किस तरह।

ooo

ग़ज़ल

घटाएं खूब आती हैं बरसना भूल जाती हैं,
बहारें बिन तेरे आकर निखरना भूल जाती हैं।

प्यासी रूह है तब से गए तुम दूर हो जब से,
मेरी आशाओं की किरणें चमकना भूल जाती हैं।

कोई पूछे उन्हे जाकर मिलेंगे कब गले आकर,
उजड़ कर बस्तियां दिल की यह बसना भूल जाती हैं।

बढ़ी हैं दूरिया ऐसी हुई मजबूरियां ऐसी,
चली हैं आंधियां ग़म की जो थमना भूल जाती हैं।

लगे है झटके कुछ ऐसे उठा तुफान हो जैसे,
चली उलटी हवाएं रूख बदलना भूल जाती हैं।

ज़माने वाले क्या जाने लगी दिल की न पहचाने,
जो बातें दिल में बैठी हैं निकलना भूल जाती हैं।

जहां 'अमरीक' है रहता वहां ग़म दरिया बन बहता,
तरंगें उठती हैं ऐसी जो हटना भूल जाती हैं।

ग़ज़ल

कारवाने जिंदगी चलता रहा।
दर्द भी पहलू में ही पलता रहा।

अपनी राहों पर रहा हूं गामज़न,
यह जमाना ख़ाह–म–ख़ाह जलता रहा।

उनके हुस्न–ए–जाविदां को देखकर,
चांद शर्माता रहा ढ़लता रहा।

आफ़तों का इक तूफां था सामने,
बारहा उठता रहा टलता रहा।

दिल के अरमानों का इक गुलज़ार भी,
उम्र भर ही फूलता फलता रहा।

मेरे हमदर्दों का झुंड ऐसा भी था,
मूंग सीने पर सदा दलता रहा।

कुल मिलाकर खूब गुज़री है उम्र,
कद्र क्यूं 'अमरीक' न करता रहा।

ग़ज़ल

या ख़ुदा कैसा ज़माना आ गया।
हर तरफ़ अंधेर गहरा छा गया।

उखड़ा–उखड़ा आज हर इंसान है,
इंसानियत का महल ही थर्रा गया।

हम निशाने बिन हैं सारे चल रहे,
हर निशाना जैसे है धुंधला गया।

लोग कहते हैं तरक्की हो रही,
मैं तरक्की देख कर शर्मा गया।

तन बदन से दूर हैं सब पहरहन,
दौर यह तहज़ीब को ही खा गया।

इसको आज़ादी या बर्बादी कहें,
नग़मे ख़ुद गर्ज़ी के हर इक गा गया।

अब गुलस्तिानों में गुल बे महक हैं,
ऐसा ही माहौल सब को भा गया।

शोर–ओ–गुल है या कोई है गा रहा,
जिस को सुन मेरा यह दिल भर्रा गया।

हम नवाओ थाम लो इस को ज़रा,
देख कर 'अमरीक' है घबरा गया।

ग़ज़ल

ग़म नहीं अब रह रहे वह दूर हैं।
रह रहे हैं पर बड़े मजबूर हैं।

कर दिया हालात ने हम से जुदा,
इस जुदाई से हुए हम चूर हैं।

उनको मिल के जो भी आया कह रहा,
हिज्र–ए–यारां में हुए बे नूर हैं।

उनका चेहरा कुदरतन ऐसा ही है,
लोग कहते हैं कि वो मग़रूर हैं।

हम जुदा जब से हुए दिलगीर हैं,
उनकी खुशियां भी हुई काफूर हैं।

जो कहें हम कर के दिखलाते भी हैं,
वो वफ़ाओं में अगर मशहूर हैं।

सूरत–ओ–सीरत में वो हैं बे मिसल,
दुनियां वाले देखकर मख़मूर हैं।

उनकी सोहबत में रहें यह मन में थी,
कर रहे वो अर्ज़ नामंजूर हैं।

कैसा यह इंसान है 'अमरीक' भी,
इस की बातें हैं या फिर अंगूर हैं।

ग़ज़ल

अरे जाने वालो ज़रा ठहर जाना,
अगर जाना ही है हमें मत बुलाना।

मेरी हालत–ए–ज़ार को देखना तुम,
इसी हाल में हमको जीना सिखाना।

वफ़ा के लिए सह रहे हैं जफ़ाएं,
ख़ुदारा हमें और न आज़माना।

यहां जिस्म है और रूह जा रही है,
बिना रूह के कैसे है जीना बताना।

सुबह शाम ही नाम उनका रटेंगे,
बताओं हमें क्या कहेगा ज़माना।

कभी न कभी याद आएं अगर हम,
हमारी तरह ही न आंसू बहाना।

नज़र कोई आता नहीं आप जैसा,
जिसे हम सुना पाएं दिल का फ़साना।

हमें हौसला दो कि घबरा रहे हैं,
कहीं लोग कह दें हमें न दीवाना।

चले हो तो कब आओगे कौन जाने,
यह कब तक पड़ेगा हमें ग़म उठाना।

बगैर उनके होता नहीं जो गुज़ारा,
तू 'अमरीक' हमराह ही हो जा रवाना।

ग़ज़ल

दो दिनों की बात है तुम फिर चले जाना,
क्या सुहानी रात है तुम फिर चले जाना।

आसमां पे बादलों की हैं बारातें जा रही,
होने को बरसात है तुम फिर चले जाना।

इन हवाओं में ख़ुमारी और मस्ती देखिए,
खुशबू की बहुतायत है तुम फिर चले जाना।

उम्र भर ऐसा समां तो फिर न आएगा कभी,
सज रहे बाग़ात है तुम फिर चले जाना।

मांग कर हमने दुआएं ली थी घड़ियां वसल की,
कीमती सौग़ात है तुम फिर चले जाना।

किस तरह रोकूं तुम्हे यह समझ में आता नहीं,
जुड़ रहे दो हाथ हैं तुम फिर चले जाना।

जाओगे कब आआगे किसको पता इस बात का,
आख़री लम्हात हैं तुम फिर चले जाना।

तुम अरे 'अमरीक' बिल्कुल साफ़ ये कह दो ज़रा,
हो रही प्रभात है तुम फिर चले जाना।

ग़ज़ल

कब से हूं बेचैन मैं तेरे लिए,
जीना भी दूभर हुआ तेरे लिए।

कुछ भी तो अच्छा नहीं है लग रहा,
हैं खड़े दुख बदनुमा चेहरे लिए।

आप जैसा इस जहां में कौन हैं,
बहुत ही चारों तरफ फेरे किए।

जिससे डरते लोग देखे कांपते,
हमने तो उस दार पर डेरे किए।

हिज्र–ए–यारां में तो हमने उम्र भर,
तड़प कर ही सांस बहुतेरे लिए।

आइए सहलाइए लोगों ने तो,
ज़ख़्म सीने पर बहुत गहरे किए।

रूह जिस्म को छोड़ कर जाने को है,
अब नहीं रूकती बहुत पहरे किए।

दिल को अै 'अमरीक' कुछ समझाइए,
कान फ़रियादों ने है बहरे किए।

ग़ज़ल

दिल तो दीवाना है इसको क्या कहें।
कब यह माना है इसे अब क्या कहें।

इस ज़माने में वफ़ा है चाह रहा,
कितना अनजाना है इसको क्या कहें।

सांयों के पीछे है हरदम भागता,
क्या इसे पाना है इसको क्या कहें।

मांग इसकी क्या कोई पूरी करे,
मांग बचगाना है इसको क्या कहें।

इसकी हर हरकत पे हंसी आ रही,
ख़ुद ही शर्माना है इसको क्या कहें।

चाह रहा उड़ना यह अब आकाश में,
उड़ कहां जाना है इसको क्या कहें।

सबको कहता है मेरी पहले सुनो,
क्या सुनाना है इसे अब क्या कहें।

मचलता है ख़ाहमख़ाह शामो सहर,
गा रहा गाना है इसको क्या कहें।

ग़ज़ल

उन को आने में है देरी हो गई।
ज़िंदगी मिट्टी की ढ़ेरी हो गई।

मैं गिला शिकवा बताओ क्या करूं,
मर्ज़ी तड़पाने की तेरी हो गई।

तूं तो अपनी मौज में होगा वहां,
पर बुरी हालत तो मेरी हो गई।

तू बता तेरे बिना कैसे जिएं,
दुनिया ही मेरी अंधेरी हो गई।

तू ही तो हर मुसीबत को मुझे,
घेर लेने की दिलेरी हो गई।

ख़ुशनसीबी है कि तुम थे मिल गए,
पर यह कैसी हेरा फ़ेरी हो गई।

तू न आएगा अभी यह जानकर,
मेरे तन मन की गनेरी हो गई।

मान ली है हार अब 'अमरीक' ने,
आ भी जाओ अब घनेरी हो गई।

ग़ज़ल

दिल पे क्या गुज़री बयां कैसे करें,
ग़म भरी गगरी बयां कैसे करें।

हमने तो चाहा नहीं था बिछुड़ना,
यह हुआ जबरी बयां कैसे करें।

बहुत समझाया कि आ ही जाएंगे,
इतनी बेसबरी ब्यां कैसे करे।

क्यों मुहब्बत करने वालों को सदा,
दर्द बेकदरी ब्यां कैसे करे।

बहुत कोशिश की सुधरने की मगर,
हालत क्या सुधरी ब्यां कैसे करें।

समझ ना पाए शुब्हों की गर्द यह,
क्यों नहीं उतरी ब्यां कैसे करें।

बदला मौसम आपके आने की फिर,
उम्मीद है उभरी ब्यां कैसे करें।

तूं भी तो ग़मगीन है 'अमरीक' अब,
तेरी बेख़बरी ब्यां कैसे करें।

कौन सी ज़िद इसकी मैं पूरी करूं,
मस्त मस्ताना है इसको क्या कहें।

देख हालत इसको अब 'अमरीक' भी,
दे रहा ताना इसे अब क्या कहें।

ग़ज़ल

मत कहो जाओ चला ही जांऊगा।
आपको मैं फिर नज़र न आंऊगा।

इतनी भी क्या बेरूखी हमसे हुई,
मैं इसे बिल्कुल ही सह न पांऊगा।

आप मुझ से क्यू हुए नाराज़ हैं,
रंजिशें मैं किस तरह रूकवांऊगा।

प्यास धरती की बुझाने के लिए,
बन घटा आकाश पर मैं छाऊंगा।

आप रूठे हैं मनाने के लिए,
हो सका भगवन को भी रीझाऊंगा।

आपकी खातिर खुले आकाश में,
तोड़ कर सारे सितारे लांऊगा।

बावफ़ा हूं यह बताने के लिए,
चीर कर सीना तुम्हे दिखलांऊगा।

कह दिया 'अमरीक' ने सौ बार,
आपकी खातिर जहां ठुकराऊंगा।

ग़ज़ल

ख़्वाब में आते हो लेकिन खुद भी तो आया करें,
यूं हमें हर रोज़ ही ऐसे न तड़पाया करें।

बहुत गुज़री है उम्र थोड़ी सी बाकी रह गई,
इन दिनों आकर हमें इक पल तो मिल जाया करें।

मेरी ख्वाहिश है तुम्हारे पास ही बैठा रहूं,
कब यह पूरी हो सकेगी यह तो बतलाया करें।

कौन जाने वक्त ऐसा फिर मिले या न मिले,
कीमती इस वक्त को ऐसे न गंवाया करें।

हम अकेले ही उम्र भर दुख ये न सहते रहें,
आप भी कुछ इनमें से दुख झेल दिखलाया करें।

हर कदम पर आपकी यादें सहारा बन गई,
आप इन यादों के मीठे गीत ही गाया करें।

कब तलक कायम रहेंगी आपसे यह दूरियां,
आ भी जाओ ख़ाहमख़ाह यह वक्त न ज़ाया करें।

दिल मेरे के दर्द को महसूस करके देखिए,
इस बेचारे को हमेशा यूं न ठुकराया करें।

राहों पे हैं हम खड़े 'अमरीक' भी तो पास है,
हम गरीबों पर कभी तो रहम भी खाया करें।

ग़ज़ल

याद करते हैं जिन्हें शामो सहर,
वो हमारे दिल में बसते हैं मगर।

हर गुलस्तिां के गुलों कलियों में भी,
आ रही है आपकी पल–पल खबर।

बेकरारी हद से बढ़ जाती है जब,
अपने ही आपे में आते हो नज़र।

नफ़रतों के इस उंठे तूफ़ान में,
उखड़ न जाए वफ़ाओं के शजर।

दूर हो नज़दीक हो क्या फ़र्क है,
हो रचे तुम खून में यह है फ़ख़र।

हम हों मंजूरे नज़र ख्वाहिश है ये,
ना हो पूरी तो कर लेंगे सबर।

आप गर यूं ही हमें मिलते रहें,
बहुत बेहतर गुजर जाएगा सफर।

संभल कर चलना अरे 'अमरीक' अब,
हो न जाए इस ज़माने का असर।

ग़ज़ल

हाले दिल कैसे कहूं तूं ही बता।
बिन कहे कैसे रहूं तू ही बता।

कोई भी मेरी ख़ता जब है नहीं,
बेरूखी कैसे सहूं तू ही बता।

नाचने लगता हूं तुझ को देख कर,
यह भी है कैसा जुनूं तू ही बता।

तिरी नज़रों का पीया है जाम जब,
क्यूं नशा कोई करूं तू ही बता।

राहे रास्ते ये चला हूं उम्र भर,
ऊंची नीची क्यूं सहूं तू ही बता।

बेतुके माहौल में बैठा हुआ,
ख़ाहमख़ा क्यूं सर धुन्नू तू ही बता।

मैं दोराहे पर खड़ा हूं देर से,
कौन सी राह पर चलूं तू ही बता।

कौन सा ढंग आज अपनाने से मैं,
सुर्खरु जो हो संकू तू ही बता।

ग़ज़ल

ग़म नहीं कि वो चले ही जाएंगे।
ग़म तो यह है हम भुला न पाएंगे।

वो हमारी दुनिया में जब आए थे,
यह नहीं सोचा था दिन यह आएंगे।

जल्द सब रंगीनियां होंगी ख़त्म,
वो हमारी बात यूं ठुकराएंगे।

किस वजह से वो हुए नाराज़ हैं,
ता उम्र वो यह नहीं समझाएंगे।

मन के मंदिर में वही तस्वीर है,
हम सदा उसको ही लटकाएंगे।

सोच रखा था रहेंगे साथ साथ,
क्या पता था यह ज़ुल्म भी ढाएंगे।

ठहरिए बस क़ुछ दिनों की बात है,
फिर नहीं हम आपको रूकवाएंगे।

दस्त बस्ता हैं गुज़ारिश कर रहे,
बिछड़ने का पल न फिर से लाएंगे।

हम से क्या 'अमरीक' नादानी हुई,
वो चले जाएंगे हम पछताएंगे।

ग़ज़ल

जब खिलेंगे फूल खुशबू आएगी।
दिल मिलेंगे तो बेचैनी जाएगी।

मस्तियां माहौल में बिखरेंगी तब,
जब घटा फिर आसमां पर छायेगी।

चांदनी जब रात होगी चौहदवीं,
नूर की चादर सी इक लहराएगी।

दिल की तारों पर फिरी मिज़राब जब,
सारी दुनिया मधुर नगमें गाएगी।

क्या हुआ पतझड़ का अब जो राज है,
ये खिज़ां ही फिर बहारें लाएगी।

धरती और आकाश मिलते है जहां,
नज़र की वो हद ही समझी जाएगी।

ग़ज़ल

हाले दिल कैसे कहूं मजबूर हूं,
पास रहकर भी मैं कितना दूर हूं।

नज़र मिलती है मगर पल के लिए,
कौंध साफ़ बिजली फिर बेनूर हूं।

देखने में कुछ कमी मुझमें नहीं,
ठोकरें खाकर मैं चकना चूर हूं।

मिलते हैं लेकिन बेगानों की तरह,
इन अदाओं पे हुआ मसरूर हूं।

शुक्र है वो नाम मेरा ले रहे,
इस खुशी में मैं हुआ मखमूर हूं।

इस ख़ला में कुछ नज़र आता नहीं,
दूर तक इसमें रहा मैं घूर हूं।

कौन कहता है भुला दूंगा उन्हें,
उनकी यादों से हुआ भरपूर हूं।

दुनियां वाले कुछ कहें परवाह नहीं,
ऐसी बातें सुनने में मशहूर हूं।

जिस में न 'अमरीक' तेरा ज़िकर है,
ऐसी महफ़िल से हुआ मफ़रूर हूं।

ग़ज़ल

आप ने कैसा करिश्मा कर दिया।
मेरा दामन हर खुशी से भर दिया।

ज़िंदगी मेरी में अब है क्या कमी,
मेहरबां होकर है ऐसा वर दिया।

आज मैं बिल्कुल हुआ बेख़ौफ़ हूं,
दूर मेरा कर है सारा डर दिया।

मैं तो इक बेनाम सा इंसान था,
आज मेरा नाम ऊपर धर दिया।

मैं ज़माने में हुआ मशहूर हूं,
आगे बढ़ने को मुझ अवसर दिया।

लोग सुनते हैं मेरी आवाज़ को,
इक सुरीला सा मुझे है स्वर दिया।

उड़ रहा हूं मैं खुले माहौल में,
कफ़स मेरा तोड़ बाहर कर दिया।

दिल मेरा था खुश्क रेगिस्तान सा,
बन घटा बरसे तो कर है तर दिया।

नज़म – नया साल

नए साल की आप सब को बधाई।
शुक्र है घड़ी आज खुशियों की आई।

जो गुज़रा सो गुज़रा अब इसको भुलाएं,
जो आया है इसको सुखद हम बनाएं।

गए साल में कमियां जो भी रही थीं,
करें दूर चाहे ग़लत या सही थी।

करो जतन नफ़रत का मिट जाए कोहरा,
जो इंसानियत का करे हर्ज़ दोहरा।

करें वायदा हर इक से है प्यार करना,
सभी मुश्किलों से है हमने उभरना।

सभी वतन वाले हैं गर भाई–भाई,
तो आपस में फिर हम करें क्यों लड़ाई।

कभी ऊंचा नीचा किसी को न जाने,
बराबर है सब अपने दिल में यह माने।

बहुत कीमती पल मिले हैं उम्र के,
न हों ज़ाया कंवल खिले हैं उम्र के।

यह 'अमरीक' से मैनें कहते सुना है,
नए साल की इस नज़्म को चुना है।

ग़ज़ल

वो सफाए हस्ती से मुझको मिटाना चाह रहे,
सदियों से जो गिर न पाया कुतुब मीनार हूं।

लाख हमला आवरों को जिसने रोका बारहा,
सदियों से जो गिर न पाई चीन की दीवार हूं।

मैं वो धरती हूं कि जिस पर कितने पर्वत हैं खड़े,
मुददतों से सिर पर उठाए मैं खड़ा यह भार हूं।

अनगिनत आए लड़ाकू थे मिटाने के लिए,
मिट गए वो ख़ुद मगर हारा नहीं इक बार हूं।

हूं समुंद्र जिसमें नदियां मुददतों से गिर रही,
सबको अपने में समोकर मैं खड़ा हमवार हूं।

आसमां हूं जिसमें सूरज चांद तारे बहुत हैं,
मैं भी सीने मे लिए इक दर्द का अंबार हूं।

ग़ज़ल

जाने वालों को दुआएं दिल से देते जाएंगे।
उनकी यादों से हमेशा अपना दिल बहलाएंगे।

जिस जगह रहते रहे हम अपने घर की ही तरह,
उस जगह को उम्र भर हम भूल कैसे पाएंगे।

जा रहे हो इक नए जीवन को पाने के लिए,
गुल गुलस्तिानों से चुन कर लाएंगे।

आप हर दिन सीढ़ियां तरक्की की चढ़ते जाईए,
देख कर खुशियों में हम फूले नही समाएंगे।

हर क़दम पर कामयाबी हो सुवागत में खड़ी,
दुनिया वाले देखकर हैरानगी दिखलाएंगे।

ज़िंदगी में कोई मुश्किल राह न रोके आपका,
आ भी जाए तो कभी फिर आप न घबराएंगे।

हम ने जो कुछ भी किया है आपके हित में किया,
खट्टी मीट्ठी जो हुई बातें उन्हे बिसराएंगे।

देखना संघर्ष का दामन कभी न छोड़ना,
करके मेहनत खुशनसीबी को बुलाकर लाएंगे।

याद रखना इस जगह को जो है मंदिर असल में,
ज्ञान मिलता है यहां से सबको यह समझाएंगे।

प्यार जो 'अमरीक' ने बांटा है अब तक आपको,
यह निशानी ऐ अज़ीज़ो भूल तो न जाएंगे।

ग़ज़ल

आपको देखा तो बस मैं देखता ही रह गया।
उनके बारे में सभी कुछ बिन कहे ही कह गया।

अपनी हालत एक तिनके की तरह ही जानीएं,
हुसने यारां है समुंद्र जिसमें तिनका बह गया।

सह न पाए उनकी पल भर की हम नाराज़गी,
दिल हमारा ज़िंदगी की हर मुसीबत सह गया।

उस निगाहे नाज़ पर कुर्बां दिलो जां से हूं मैं,
हर अदाए शौक पर मैं कट गया हो तह गया।

और भी होंगे हसीं दुनिया में कोई शक नहीं,
उनको जब देखा तो हर मीनारे हुस्न ढह गया।

तूने ऐ 'अमरीक' जो राहे इश्क है चुन लिया,
ज़िंदगी का सफ़र अच्छा बहुत ही हो तह गया।

ग़ज़ल

जाने जां जाना नहीं मुंह मोड़ कर।
क्या मिलेगा शीशा–ए दिल तोड़ कर।

रंग भरी महफ़िल सुहाना यह समां,
ख़ामख़ाह क्यों जा रहे हो छोड़ कर।

छोड़िए ज़िद बस इधर तो देखिए,
हम खड़ें हैं हाथ दोनो जोड़ कर।

जब ख़बर आई अभी वो जा रहे,
रख दिया है तन बदन झंझोड़ कर।

बदल दो सारे इरादे आज से,
मर न जाएं हम कहीं सर फोड़ कर।

जान भी कुर्बां है उस इंसान पर,
लाएगा जो उनको वापिस मोड़ कर।

ग़ज़ल

क्या हुआ उनसे मिले जब यह बता सकते नहीं,
दिल के गुल सारे खिले कब यह बता सकते नहीं।

उनकी आमद से हुआ माहौल ही मदहोश है,
ज़ख़्म हिजर के सिले कब यह बता सकते नहीं।

छू लिया जो तन बदन तो कंपकपी सी छिड़ गई,
मिट गए शिकवे गिले कब यह बता सकते नहीं।

दर्द के ऊंचे थे पर्वत देर से उभरे हुए,
सब वो जड़ से हैं हिले कब यह बता सकते नही।

हमारे खाबों की ताबीर कुछ ऐसी हुई,
ढह गए सब ग़म किले कब यह बता सकते नही।

क्यों अरे 'अमरीक' तू ग़मगीन है बैठा हुआ,
सब फिक्र कैसे टले कब यह बता सकते नहीं।

ग़ज़ल

जुल्फ़ को झटका है इस अंदाज़ से।
होश मेरे रह गए परवाज़ से।

शीशा–ए–दिल में लकीरें आ गईं,
लगता है यूं लरज़ती आवाज से।

बहुत कोशिश की उन्हे रिझा सकूं,
वो हमेशा ही रहे नाराज़ से।

वो हमें जाने न जाने ग़म नहीं,
हम हुए उन पर फ़िदा आग़ाज़ से।

हुस्न वाले यूं ही करते आए हैं,
हम हुए वाकिफ़ अभी इस राज़ से।

वो हमारे ही रहेंगे उम्र भर,
आ रही आवाज़ दिल के साज़ से।

हम हुए घायल तड़फते रह गए,
आप ने देखा है इतने नाज़ से।

मत कहो 'अमरीक' तुम गुस्ताख़ हो,
कह रहे हम बात हैं हमराज़ से।

ग़ज़ल

(यह नज़म हिंद–ओ–पाक सरहद वाघा वार्डर पर बैठ कर लिखी गई जब मैं २००७ में पाकिस्तान गया)

हिंदुस्तान और पाकिस्तान भी दोनों वतन हमारे हैं,
कायम दायम रहें खुदारा जान से हमें प्यारे हैं।

दो भाई जब हुए अलहिदा इस में कोई हर्ज़ न था,
पर आपस में लड़ना–भिड़ना किसी का भी यह फ़र्ज़ न था।

उलझन कोई भी कैसी हो, वह सुलझाई जा सकती,
मुश्किल कोई भी कैसी हो, सभी मिटाई जा सकती।

बात–बात पर जंग छेड़ना कहां की दानिश मंदी है,
बहुत पुरानी नहीं टूटने वाली भाई बंदी है।

अपने हाथों अपनों का ही खून बहाना ठीक नहीं,
अपने हाथों अपनों का ही गला दबाना ठीक नहीं।

मिल बैठें तो सारे मसले जल्दी हल हो जाएंगें,
दोनों तरफ़ के लोग देखना घी के दिए जलाएंगे।

आम लोग तो अमन चैन से सदा ही रहना चाहते है,
पर कुछ लोग हैं जो लोगों का खून ही पीना चाहते हैं।

जंगों पर हथियारों पर अब लगता जो सरमाया है,
लोगों पर वो खर्च करेंगे दिल में यही समाया है।

हथियारों के बेचने वालों को हमने समझाना है,
जान गए हैं चाल तुम्हारी अब न धोखा खाना है।

खुद कफ़ील हो जाएंगे तब सभी सुखी हो जाएंगे,
लेकर साथ 'अमरीक' सिंह को गीत खुशी के गाएंगे।

नज़म

(मेरे पाकिस्तानी अज़ीज़ दोस्त जनाब जाहिद मुमताज जिसने पाकिस्तान पंहुचने पर हमें बहुत प्यार और मोहब्बत से निवाज़ा। यह साहब गुजरांवाला (पाक) में एडवोकेट हैं)

आती है हमेशा याद ज़ाहिद मुमताज़ की,
कानों मे सुरीली बजें घंटियां आवाज़ की।

कैसे हो तारीफ अलफाज़ बहुत कम है,
मेरी काबलियत में नही कोई दम है।

खुशियों मुसरतों में रहता भरपूर है,
दायमी खुमार में वो रहता मख़मूर है।

सूरत व सीरत से लगता फ़रिश्ता है,
जैसे कि खुदा से हुआ मुददतों से रिश्ता है।

मीठी है जुबान जैसे शहद पुराना हो,
पास रहके देखा वो ख़लूस का खज़ाना है।

बदले हालात में वो बदलना है जानता,
सीने में वो किसी का भी ख़ौफ़ नहीं मानता।

खुद खुश रहना, खुश रखना तमाम को,
उसमें उदासी कभी देखी नहीं नाम को।

छोटे और बड़े को वो गले से लगाता है,
उसके प्यार का हिसाब नहीं आता है।

चाहता तबदीली वो है आज के समाज में,
कोई ग़मगीन न हो देश में न राज में।

मेरे अल्लाह मुझे तुम ऐसी ही तौफ़ीक दो,
जाहिद सा बनूं यह आवाज़ 'अमरीक' की।

ग़ज़ल

दिल मुझे कहता है थोड़ा कर सबर।
जल्द आएंगे तेरे वो हम सफ़र।

वो वहां इक पल भी रह ना पाएंगे,
जब तेरी फ़रयाद का होगा असर।

उनको अपने जबर पर ग़र नाज़ है,
मुझ को अपने सबर पर भी है फख़र।

दर्द से लबरेज़ चंद अलफ़ाज ये,
कीमती तोहफ़ा है ये उनकी नज़रं।

हर घड़ी रहते वह दिल के पास हैं,
बिन मिले रहता है वो सूना मगर।

आए हैं तूफ़ां मगर कायम हूं मैं,
उखड़ ही जाता है जब के हर शजर।

हैं मुजस्मां ए वफा तो क्या हुआ,
सदियों से मेरी वफ़ा भी है अमर।

है तहिया कर लिया 'अमरीक' ने,
अब न छोड़ूगां मुहब्बत की डगर।

ग़ज़ल

बड़ी दूर से उनके दर पे हूं आया,
उम्मीदों के गुलदान ले कर हूं आया।

हसीन आप हैं मैं हुसन का पुजारी,
तुम्हें अपनी पूजा का मन्दिर बनाया।

रहो सामने दुनिया रहती है रौशन,
नज़र जब ना आओ अन्धेरा है छाया।

सिवा आपके होगा कैसे गुज़ारा,
कुछ ऐसा मेरे पर है जादू चलाया।

जहां जाओगे मैं भी मौजूद हूंगा,
जुदा कैसे होगा तुम्हारा हूं साया।

अरे दुनियां वालों जरा बात समझो,
ख़ुदा जान कर उनसे दिल है लगाया।

हुआ मत करो तुम ख़फ़ा जाने जानां,
बहुत बार मैने तुम्हे है मनाया।

ऐ 'अमरीक' कैसी ये मजबूरियां हैं,
उन्होंने कभी राज़े दिल ना बताया।

ग़ज़ल

दिल पे क्या गुज़रेगी जब वो जाएंगे।
किस को है मालूम फिर कब आएंगे।

क्यों हमारे कुर्ब से उक्ता गऐ,
उमर भर हम ये समझ ना पाएंगें।

हमसे बेहतर कौन उनको चाहेगा,
पास रहकर क्या उन्हें समझाएंगे।

कागज़ी फूलों में खुशबू है कहां,
ये नही माहौल को महकाएंगे।

या ख़ुदा कैसा ज़माना आ गया,
बावफ़ा भी वे वफ़ा कहलाएंगे।

यादे यारां में हमेशा बैठकर,
हिजर के नग़मात् हर दम गाएंगें।

वह अगर अपना इरादा बदल दें,
हम खुशी में नाच कर दिखलाएंगें।

तू अरे 'अमरीक' घबराता है क्यों,
छोड़ कर तुझको बहुत पछताएंगें।

ग़ज़ल

हक़ीक़त है कि वो हरवक्त मेरे साथ रहते हैं।
मेरे दिल में छुपी जो बात है वो बात कहते हैं।

हमेशा आसमाने दिल पे छाए है घटा बनकर,
मेरी इस वादी–ए दिल में घटा बन कर वो बहते हैं।

बड़ी हैरानगी है वह नज़र आते नहीं लेकिन,
मेरी सारी ही तकलीफ़ात को हर पल ही सहते हैं।

हमारी दूरियों को भी सिर्फ़ मजबूरियां समझो,
सुना है मैंने जब भी याद करते है सिसकते हैं।

जवानी में तो हर इंसान झटके सह जाता है,
मगर पीरी में क्यों 'अमरीक' जैसों को झटकते हैं।

ग़ज़ल

आप के बिन रह सकेंगे किस तरह।
उमर भर ग़म सह सकेंगे किस तरह।

दिल में इक जज़्बात का तूफान है,
इस ज़बां से कह सकेंगे किस तरह।

पलकों में आंसू है जो अटके हुए,
बनके दरिया बह सकेंगे किस तरह।

शक शुब्हों के ढेर जो ऊंचे हुए,
आप ना हों ढह सकेंगे किस तरह।

सफ़रे उमर में बड़ी दुशवारियां,
ये सफ़र तह कर सकेंगे किस तरह।

ग़ज़ल

बहाना ढूंढ कर कोई उन्हें मिलना ज़रूरी है।
वो दिल के पास रहते है मगर नज़रों से दूरी है।

उन्हें देखा है जब से और को देखेगा क्यों कोई,
ये मेरी जिंदगी उनके सिवा बिल्कुल अधूरी है।

तलाशे य़ार में सारा जहां ही छान मारा,
फिरा हूं दर बदर लेकिन हुई ना आस पूरी है।

वो क्यों नाराज़ है मेरी समझ में ही नहीं आता,
नही हैं जब से वो माहोल में तब से बे नूरी है।

मेरे हमदम तूझे मिलने की खातर देख लो मैने,
मुसीबत कौन सी है जो नहीं मैने अबूरी है।

तेरी आंखो से मस्ती के फुहारे चलते रहते है,
शुभा इनमे या जैसे ये भी शायद मै अंगूरी है।

ग़ज़ल

जिंदगी जिस के लिए बर्बाद है।
वो ना जाने अब कहां आबाद है।

और सारे हादसे भूला हूं मैं,
बिछड़ने का वक्त अब तक याद है।

उमर भर जिसके लिए जीते रहे,
आज तक भी मिल ना पाई दाद है।

दूर इतनी वो है ज़ालिम जा बसा,
पहुंच ना पाई यहां फ़रयाद है।

आज तक ताईर रहा जो कफ़स,
क्या हुआ जो अब हुआ आज़ाद है।

हर तरफ है रौनकें फैली हुईं,
फिर भी मेरा दिल रहा नाशाद है।

ग़ज़ल

जिसकी ख़ातर उमर ये बर्बाद है।
वो कहां सुनता मेरी फ़रियाद है।

इन्तज़ारे यार में इस जिसमे से,
होने वाली रूह मेरी आज़ाद है।

छोड़कर यूं ही हमें चल दिया,
संभल न पाया दिले नाशाद है।

आएगा आख़िर वो एक दिन आएगा,
शहरे उम्मीदां तभी आबाद है।

उमर भर सहता जफ़ाएं ही रहा,
आज तक लेकिन न मिली दाद है।

सबर करने में हुआ मशहूर हूं,
वो जबर करने में भी उस्ताद है।

ग़ज़ल

चाहते है घर हमारा देश भी खुशहाल हो।
सख़्त मेहनत की कभी भी अब न धीमी चाल हो।

काम जो भी कर रहें है उसमें ग़फ़लत न करें,
हर घड़ी बस वतन की खातर ही इस्तेमाल हो।

वतन दुश्मन है जो घपले कर रहे है रात दिन,
ऐसे इन्सानों की ज़िहनियत ही पामाल हो।

वतन·का हर मरदो ज़न इसकी तरक्की के लिए,
रात दिन इस रास्ते पर गामज़न हर हाल हो।

आज मेरे वतन पर फिर संकटों का दौर है,
हिम्मते मरदां बनी इन संकटों में ढाल हो।

नफ़रतों से हम सभी को बच के रहना चाहिए,
हर किसी की ही दिलो जां से बड़ी सम्भाल हो।

सब बराबर हैं कोई ऊंचा नहीं नीचा नहीं,
हर वतन वाले की तो बस एक ही सुरताल हो।

तुम भी ऐ 'अमरीक' कुछ रवइया बदल दो,
ऐसा हो जाए वतन का फिर ना बांका बाल हो।

गीत (15 अगस्त)

पन्द्रह अगस्त बड़ा ही महान है।
हो गए आज़ाद हम ऊंची हुई शान है।

हुआ था अन्धेरा दूर देश से ग़ुलामी का,
धुल गया माथे पे जो दाग़ था ग़ुलामी का,
शहीदों की शहादत ने दिया वरदान है। पन्द्रह अगस्त ....

ग़ैर हमे रखना ग़ुलाम सदा चाहते थे,
सारा सरमाया वो विदेश ही ले जाते थे,
छोड़ा ना हमारी आन बान का निशान है। पन्द्रह अगस्त ...

शमा ऐ वतन पर जले परवाने थे,
मौत को बिहाने कुछ चले वो दिवाने थे,
फांसियों पे चढ़े हुआ जगत हैरान है। पन्द्रह अगस्त ......

छातियों पे गोले फिर तोपों के भी खाए थे,
बड़े दुख उन्होने शरीर पे उठाए थे,
वतन की राह पे झेला सभी नुक्सान है। पन्द्रह अगस्त .....

मिली है आज़ादी हम भूल गए उनको,
लगन महान और बहुत पक्की धुन को,
अच्छा नही हुआ सही मेरा अनुमान है। पन्द्रह अगस्त ....

कही 'अमरीक' ने जो बात पूरी सच्ची है,
भूलना शहीदों को ना बात कोई अच्छी है,
उत्तर ना पाएगा जो किया अहसान है। पन्द्रह अगस्त

ग़ज़ल (26 जनवरी)

जनवरी छबीस को पुरे हुए आज़ाद हम।
बन गये कानून अपने सब हुए थे शाद हम।

बाद सदियों के हुआ आज़ाद ये प्यारा वतन,
इस गुलामी की वजहा से थे हुए बर्बाद हम।

उन शहीदाने वतन को सर झुकाएं आज हम,
हर घड़ी हर पल करें उन सबका धन्यवाद हम।

जान अपनी दी मगर बख़शा है जीवन कौम को,
ये चाहिए उनकी कभी भी ना भुलाएं याद हम।

ग़ैर की थी लंबी जड़ें पहुची हुई पाताल तक,
उनको हाथो से उखाड़ा उनको दें अब दाद हम।

अपने तन पर सूरमाओं ने बहुत दुख थे सहे,
आंखों से आसूं बहें छेड़ें जो ये संवाद हम।

आज आज़ादी के सुख ये है हमें जो मिल रहे,
खून से सिंची थी धरती तब हुए आबाद हम।

आज भी 'अमरीक' आज़ादी को ख़तरा हो रहा,
आओ मिलकर फिर बजाएं अमन का एक नाद हम।

ग़ज़ल (नेताओं के लिए)

आओ आज के नेताओं को हमने ये समझाना है।
हर संकट से देश अपने को हमने अगर बचाना है।

खुद गरज़ी की लगी है उनको मोहल्लक एक बीमारी है,
साफ सियासत से इस मरज़ को हमने दूर भगाना है।

आओ उनको याद करें जो देश पे कुर्बान हुए,
घपले बाजों खुद गरजों को महा गद्दार बताना है।

जान अपनी पे खेल गये वो शान को ऊंचा बहुत किया,
ऐसा ही रस्ता नेताओं को हमने दिखलाना है।

किया खोखला देश जिन्होने कभी ना उन्हें मुआफ करो,
ऐसे ही लोगों के कारण हुआ ये देश निताना है।

माल हराम से भरे तिजोरी उनको नंगा करेंगे हम,
सेवा भाव से करे सयास्त उनको आगे लाना है।

ऐ 'अमरीक' सयास्त सुधरी मुश्किल है आसान नहीं,
बे ईमान बने जो नेता मुंह ना उन्हें लगाना है।

ग़ज़ल

देखते रहते उधर हैं बार बार।
क्या पता कब किस गली आ जाये यार।

कौन जाने लौट कर कब आएगा,
हशर तक होता रहेगा इंतज़ार।

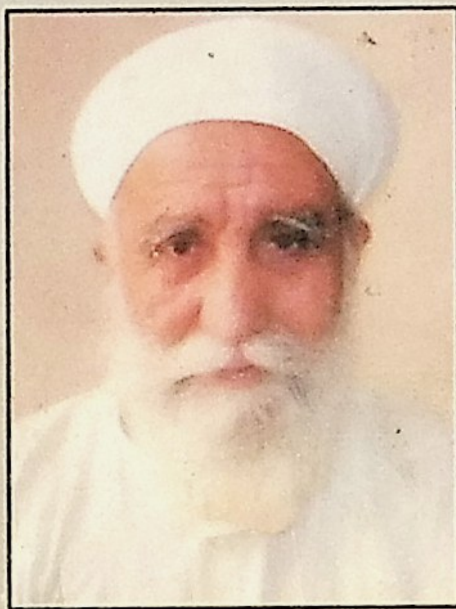
आये न आए किसे मालूम है,
जाने वाले का नही एतबार।

ज़िन्दगी इन्सां की ढलती छांव है,
अब अगर है इधर तब है आरपार।

ये जवानी इक बिदकता असप है,
जो सम्भल पाए वही है शाहसवार।

उन का आना भी तो होगा मोजज़ा,
हर मुसीबत टलेगी हो शर्मसार।

जाते जाते कह गया था आऊंगा,
हो रहा 'अमरीक' तब से है ख़्वार।



"मास्टर अमरीक सिंह मेरे लिए एक सूफ़ीयाना रंगत में पूरी तरह रंगे हुए फक्कर शायर का नाम है। इंसानियत का पुरख्लूस और दरवेश भावनाओं से लबरेज़ यह एक ऐसा मुजसमां है जिस के अन्दर तक शायरी और इखलाक तारी है। मास्टर जी ने यह सब फन अपने नेक कर्म बर्जुर्गों और उस्तादों से अपनी नम्रता के दम पर हासिल किया है ऐसा मेरा पुखता अनुमान है। अपनी जिंदगी के तर्जुबात को बजरीए कलम मास्टर जी ने एक दर्जन से ज्यादा अलग अलग मजमूएं हिन्दी/पंजाबी/उर्दू में देकर एक प्रबुद्धसाहित्यकार का प्रमाण दिया है। इन की कलम की साधना का एहसास करते हुए हरियाणा सरकार ने इनको संत तरन सिंह वहमी पुरस्कार देकर नवाजा है। आप ने शुरुआती तालीम उर्दू/फारसी की ही हासिल की थी फिर घर के माहौल और दुनियावीं जिंदगी में जो कुछ भी लिया उसको अगर साहिर लुधियानवी साहिब मरहूम के अंदाज में कहूं तो वही शेयरों की शक्ल में हयाती की झोली में डाल दिया है।"

-सी. आर. मौदगिल

ISBN 93-80672-11-X
9789380672113
Rs. 120/-

UDAAN PUBLICATIONS,
INDIA
MANSA-151505 (PUNJAB)
Phone : +91-1652-233087